भारत सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2020-2022

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 6 | अंक 14 | उदयपुर रविवार 01 अगस्त 2021 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

तब कविता से इन्द्रदेव पसीजे और बरस पड़े

कविता की ताकत का लोहा हर युग में रहा है। सतयुग हो या उसके बाद में विभिन्न युग और आज भी कविता की शक्ति जब-जब जाग्रत हुई, उसने पूरे युग को और बाद में भी अपनी प्रभावी भूमिका दी है। तुलसीदास का रामचरित मानस आज भी जन-जन का कण्ठहार बना हुआ है।

आधुनिक कवियों की बात करें तो निराला की कविता राम की शक्तिपूजा, महादेवी वर्मा की मैं नीर भरी दु:ख की बदली, सुमित्रानन्दन पंत की चांदनी रात में नौका विहार, प्रसाद की कामायनी, मैथिलीशरण गुप्त का साकेत, हरिऔध का प्रियप्रवास जैसे महाकाव्य किसी समय विशेष की कृति होने पर भी शाश्वत रचनाएं हैं।

लोकजीवन में ऐसे अनेक अनामधारी रचनाकार हुए हैं जिनके नाम-छाप की लिखी अनेक रचनाएं लोककण्ठों पर जीवित हैं। अनेक मंत्र, भजन, स्तुतियां, ब्याहुले, सिलोके मिलते हैं जिनकी ताकत का हम अनुमान नहीं लगा सकते। अनेक संगीतज्ञों के सम्बन्ध में हम सुनते हैं कि उनकी गायकी के प्रभाव से अनहोना अजूबा देखा गया।

हजारों भजन मण्डलियां हैं जो बड़ी तन्मयता से गा-बजाकर ईश्वर-भक्ति में डूबे मिलते हैं। अंधों को सूरदास कहकर कविवर सूरदास की जनव्याप्ति का अनुमान लगाया जा सकता है। उनके भजन अंधे की आंख बनकर उनके अंधेरे जीवन में आत्म-प्रकाश भरते जीविका के सहारे बने हुए हैं।

इसी प्रकार चन्द्रसखी, सहजोबाई के भजनों के सहारे न जाने कितनी विधवाओं, बेसहारों और दु:खियारियों की जीवन नैया किनारे लग रही है। इनमें मीरां के भजनों की व्यापकता तो समुद्र पार के देशों को भी भक्ति और अध्यात्म का आलम दे रही है।

कौन रच रहा है इन सबको! आज कहां हैं तुलसीदास, कहां है मीरां, चन्द्रसखी और इन जैसे संत, संन्यासी, भक्त पर उनके नाम से हर जाति-बिरादरी में सैकड़ों पुरुष और महिलाएं गा रही हैं। आज भी उनकी छाप की रचनाएं लिखी जा रही हैं। वे न केवल गाई जा रही हैं बल्कि बजाई जा रही हैं और नाची भी जा रही हैं।

कविता की ताकत का लोहा हर युग में रहा है। सतयुग हो या उसके बाद में विभिन्न युग और आज भी कविता की शक्ति जब-जब जाग्रत हुई, उसने पूरे युग को और बाद में भी अपनी प्रभावी भूमिका दी है। लोकजीवन में ऐसे अनेक अनामधारी रचनाकार हुए हैं जिनके नाम-छाप की लिखी अनेक रचनाएं लोककण्ठों पर जीवित हैं। अनेक मंत्र, भजन, स्तुतियां, ब्याहुले, सिलोके मिलते हैं जिनकी ताकत का हम अनुमान नहीं लगा सकते।

इससे किसी का कोई सरोकार नहीं कि इन भक्तों का असली प्रामाणिक जीवन क्या रहा। केवल उनके नाम का मिथक चल रहा है। नाम से किसी को कोई फर्क नहीं पड़ता। इन सबका लक्ष्य आत्मानुभूति से परमात्मानुभूति का है। इस अनुभूति प्राप्ति के लिए अनेकों ने घरबार छोड़ दिया।

चलते चलाते अच्छे खासे गृहस्थ जीवन को त्याग दिया। राजपाट, ऐश्वर्यमय जीवन को ठोकर मार दी। ऐसे अगणित संत-भक्त हैं। आज भी हैं। बहुत से गुफाओं, कन्दराओं, घने जंगलों और न जाने किन-किन जगहों पर अदृश्य जीवन तक व्यतीत कर रहे हैं।

अपने जीवन में मैं ऐसे अनेक लोगों से मिला जो दिखने दिखाने में कुछ नहीं लगे पर वे पहुंचे हुए संत-भक्त थे। ऐसे भी मिले जिन्होंने जो भी उनके सम्पर्क में आया उनके नाम के पद लिख-लिख उन्हें दिये। ऐसे हजारों पद उन्होंने लिखे सुना। ऐसे परम्पराशील गायक घराने के लोगों से मेरा मिलना हुआ जिनका काम ही अपने यजमानों का स्वस्तिवाचन कर उदरपूर्ति करने की एक लम्बी परम्परा रही।

इन सबके परे आप-हमारे जैसे साधारण जनों के उदाहरण भी मेरे सामने आंखों देखा हाल की तरह हैं जिनकी काव्यशक्ति का प्रत्यक्षीकरण देखने को मिला जो निश्चय ही दांतों तले ऊंगली चबाने जैसा है।

जिस वाकया का मैं जिक्र कर रहा हूं वह वर्ष 1986 का है। उदयपुर की स्टेट इन्स्टीट्यूट ऑफ एज्यूकेशन, रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग जिसे सभी एसआईईआरटी के नाम से ही अधिक जानते हैं, उसके शिशु शिक्षा प्रकोष्ठ द्वारा जुलाई में एक शिविर आयोजित किया गया। इस शिविर में छोटे बच्चों के लिए सरल राजस्थानी परिवेश की कविताएं लिखने विभिन्न स्थानों के रचनाकार आमंत्रित किये गये।

रचनाकारों में चित्तौड़ के शिव 'मृदुल', छोटीसादड़ी के वासुदेव चतुर्वेदी, बड़ीसादड़ी के योगेश जानी, उदयपुर से मैं स्वयं तथा कुछेक जयपुर, अलवर, गंगानगर, प्रतापगढ़ से थे। अंतिम दिन 30 जुलाई को इस शिविर का समापन सत्र रखा गया। सबको बारी-बारी से अपनी-अपनी प्रतिनिधि कोई एक रचना सुनानी थी।

संस्थान के आयोजन प्रमुख थे सर्वश्री पुरुषोत्तम तिवारी, राधामोहन पुरोहित तथा श्रीराम द्विवेदी। वर्षाकालीन सत्र होते हुए पूरा माह व्यतीत होने पर भी एक बूंद छींटा नहीं देखा गया। इससे सभी को बड़ी बेचैनी थी। फसलें बर्बाद हो रही थीं। सबओर इन्द्रदेव के लिए मानमनौती के विविध टोनेटोटके, गांव के बाहर दाल-बाटी-चूरमा की सामूहिक गोठ जिसे उजैणी कहा जाता है। उज्जैन का तो नाम भी इसी उजैणी से चल पड़ा। कहीं होम, यज्ञ, विविध अनुष्ठान, भजनभाव भी बहुत हो चुके थे। थक हारकर सभी निराश थे। हमारी ओर से सबसे पहले शिव 'मृदुल' ने जब अपनी कविता सुनानी प्रारम्भ की तो इन्द्रदेव को पसीजना पड़ा और देखते-देखते बरसात की झड़ी लग गई। उनकी कविता का प्रारम्भ था-

इन्दर राजा पाणी दो
पाणी दो गुड़धानी दो।
(1)
उमड़ घुमड़ ने आओ सा
बादल काळा लाओ सा
धनुष गगन में ताणी दो। इन्दर .....
(2)
बरसो आप तसल्ली दो
खूब मूंफल्यां तल्ली दो
तेल काढ़ती घाणी दो। इन्दर .....
(3)
उड़द मूंग अर चंवळा दो
मक्या कंवळा कंवळा दो
साखां सब करसाणी दो। इन्दर .....
(4)
सैळां पर्वत घाट्यां की
गोठ चूरमा बाट्यां की
एकबार चक छाणी दो। इन्दर .....

जोग-संजोग देखिये। राजस्थान में इस वर्ष 2021 का भी जुलाई माह लगभग समाप्ति पर है। बरसात का टोटा भी है। बरसात का वैसे ही यहां अभाग रहा है। अनेकों अकालों का सामना करते-करते यह धरती ही धोरां (रेत) की रेतीली रेगिस्तानी हो गई है- 'धरती धोरां री' कविवर कन्हैयालाल सेठिया की प्रसिद्ध प्रतिनिधि कविता है।

मैंने आज ही (25 जुलाई) को शिव 'मृदुल' जी से बात की। याद दिलाया कि उस 'इन्दर राजा पाणी दो' कविता का मुझे मुखड़ा ही याद रहा तो उन्होंने मुझे पूरी चौ छन्दी कविता लिखाई और उस शिविर की पूरी जानकारी दी। बताया कि जब उन्होंने इस कविता के दो छन्द सुनाये तो राधामोहनजी ने सूचना दी कि

कौन रच रहा है इन सबको! आज कहां हैं तुलसीदास, कहां है मीरां, चन्द्रसखी और इन जैसे संत, संन्यासी, भक्त पर उनके नाम से हर जाति-बिरादरी में सैकड़ों पुरुष और महिलाएं गा रही हैं। आज भी उनकी छाप की रचनाएं लिखी जा रही हैं। वे न केवल गाई जा रही हैं बल्कि बजाई जा रही हैं और नाची भी जा रही हैं। शिव 'मृदुल' ने जब अपनी कविता सुनानी प्रारम्भ की तो इन्द्रदेव को पसीजना पड़ा और देखते-देखते बरसात की झड़ी लग गई।

बाहर इन्दरदेव रूठमान से टूटमान हुये बरस रहे हैं। हम सबने झरमर मेहुड़ा बरसने की आवाज सुनी तो सबका मन हरा-हरा और तबीयत खुश हो गई।

पुरुषोत्तम तिवारीजी ने दरवाजे के बाहर जाकर खुले आकाश को निहारा तो सतरंगी बड़ा ही खूबसूरत धनुष तना हुआ दिखाई दिया। दौड़े-भागे आकर हमें खबर दी। यह सुन श्रीराम द्विवेदीजी भी बाहर की ओर लपाक चले। बोले, अभी तो उमड़घुमड़ बादलों का जोर लग रहा है। चलो भगवान इन्दरदेव ने सुनली।

हम सबने शिवजी को ऐसी समयोचित फलदायी कविता के लिए बधाई दी और कहा कि कविता का एक-एक शब्द सार्थक बन पड़ा है। आज का यह शिविर भी संस्थान के लिए ऐतिहासिक उपलब्धि वाला सिद्ध हुआ है।

रात्रि को दस बज रही है जब मैं यह आलेख पूरा कर रहा हूं। सुबह जब से मैंने शिवजी से मोबाइल पर बात की तब से इस सीजन का यह आज का दिन ही उदयपुर में मैं भीगा-भीगा देख रहा हूं और सोच रहा हूं काश! वे तीनों आयोजन-अधिकारी होते तो उनसे भी दो टूक नमन-वन्दन कर लेता। राधामोहनजी से तो मैं सन 1953-54 में गुरुकुल छोटीसादड़ी में हाईस्कूल के छात्र के रूप में अध्ययन कर चुका था। गुरु पूर्णिमा का शुभ दिन भी तो है।

- म. भा.

बधाई

उदयपुर (का.सं.)। सीबीएसई द्वारा घोषित बारहवीं कॉमर्स परीक्षा के परिणाम में शब्द रंजन की संपादिका रंजना-डॉ. तुक्तक भानावत के सुपुत्र अर्थांक भानावत ने 95.4 प्रतिशत अंक प्राप्त कर सफलता हांसिल की है। भानावत परिवार उच्च शिक्षित परिवार है। अर्थांक के अग्रज शब्दांक आईआईटी मुम्बई में सिविल इन्जीनियरिंग (फाइनल) के छात्र हैं। बुआ डॉ. कविता तथा डॉ. कहानी भी हिन्दी में पीएच.डी. तथा दादाजी डॉ. महेन्द्र भानावत लोकजीवन के अध्येता हैं।

पोथीखाना

'कम्यूनिकेशन टुडे' के मीडिया शिक्षा सम्बन्धी दो उपलब्धिपूर्ण रजत अंक

जयपुर से डॉ. संजीव भानावत-परिवार ने साहित्य, लेखन तथा पत्रकारिता के क्षेत्र में अच्छी पैठ, पहचान तथा प्रसिद्धि पाई है। उसके बाद संजीव भानावत ने मुख्यत: मीडिया शिक्षा के क्षेत्र में अपने पायदान खड़े किये और कन्यूनिकेशन टुडे त्रैमासिक अंग्रेजी-हिन्दी का सम्पादन करते उपलब्धिमूलक रजत वर्ष व्यतीत कर दिये।

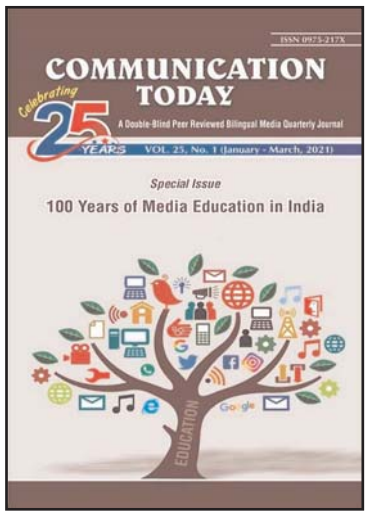

सन् 2021 का प्रस्तुत जनवरी-मार्च अंक भारत में मीडिया शिक्षा की सौ वर्षीय उपलब्धियों का लेखाजोखा प्रस्तुत करने वाला मूल्यवान दस्तावेजीकरण है। देश के विविध क्षेत्रों में शिक्षा की जो स्थिति-परिस्थिति रही उसका आकलन प्रस्तुत करना अपनेआप में उल्लेखनीय है।

अपने सम्पादकीय में डॉ. संजीव ने स्पष्ट किया कि सन् 2020 में भारतीय शिक्षा की शताब्दी घोषित की गई। कुल 298 पृष्ठों में 34 आलेखों में से हिन्दी में केवल 10 आलेख हैं। ऐसा नहीं है कि अंग्रेजी में लिखने वाले हिन्दी नहीं जानते पर उनकी ऐसी मानसिकता बन गई है कि इससे वे रोबिले और चुस्त-दुरूस्त बने रहते हैं।

डॉ. संजीव स्वयं अपने पिता डॉ. नरेन्द्र भानावत की तरह हिन्दी के सधे हुए लेखक एवं सुविचारित वक्ता हैं। उनकी पत्रकारिता पर सर्वाधिक पुस्तकें हिन्दी में हैं जो अपने विषय की मान्य मानक पुस्तकें हैं।

यह वह वक्त है जब अपने देश में ही नहीं, पूरे विश्व में हिन्दी का परचम फैल रहा है। वहां अनेक विश्वविद्यालयों में हिन्दी की पढ़ाई की माकूल व्यवस्था है लेकिन पता नहीं, हमें अपने ही दीये तले अंधेरा रखने में कौनसी हुंसियारी की दाद मिल रही है। अंग्रेजी में तो अपने मन की बात तबीयत खोलकर प्रस्तुत करने वाली उन्मुक्त तथा संगतकारी शब्दावली ही नहीं है।

ऐसा ही दूसरा अप्रेल-जून का अंक है जो मीडिया शिक्षा का क्रिटीकल थोट्स लिये है। इसमें कुल 20 आलेखों में मात्र तीन आलेख हिन्दी में हैं पर ये तीनों ही अपने विषय की पूर्ण ईमानदारी लिये सटीक तथा स्पष्ट विश्लेषण प्रस्तुत करते हैं।

इस अंक का पहला लेख 'भारत में मीडिया शिक्षा के 100 वर्ष' भारतीय जनसंचार संस्थान, नई दिल्ली के महानिदेशक प्रो. संजय द्विवेदी द्वारा लिखा गया है जिसमें सौ वर्षीय मीडिया शिक्षा का सिलसिलेवार सारभूत दिग्दर्शन करते वे लिखते हैं- 'सन् 1920 में थियोसोफिकल सोसायटी के तत्वावधान में मद्रास राष्ट्रीय विश्वविद्यालय में डाक्टर एनी बसेंट ने पत्रकारिता का पहला पाठ्यक्रम शुरू किया। 19 अगस्त 1965 को सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय ने भारतीय जनसंचार संस्थान की स्थापना की जो आज मीडिया शिक्षा के क्षेत्र में पूरे एशिया में सबसे अग्रणी संस्थान है। भोपाल में माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, रायपुर में कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय एवं जयपुर में हरिदेव जोशी पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय पूर्णरूप से मीडिया शिक्षण एवं प्रशिक्षण का कार्य कर रहे हैं।'

(पृ. 1)

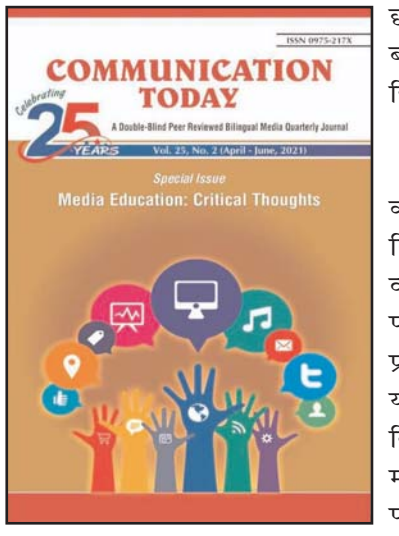

भारत में लगभग 1500 से ज्यादा मीडिया शिक्षण संस्थान हैं। क्या हमारी पत्रकारिता बाजार के लिए है, कॉरपोरेट के लिए है, सरकार के लिए है या फिर समाज के लिए है? अगर हमें सच्चा लोकतंत्र चाहिये तो पत्रकारिता को अपने लक्ष्यों के बारे में बहुत गहराई से सोचना होगा। मीडिया शिक्षा का काम सिर्फ छात्रों को ज्ञान देना नहीं है बल्कि उन्हें मीडिया उद्योग के हिसाब से तैयार करना भी है।

(पृ. 3)

मीडिया में आ रहे युवकों को जड़ों से ही कुछ ऐसे विचार मिलें जो उन्हें व्यावसायिकता के साथ-साथ पत्रकारों की भी शिक्षा दें। प्रत्येक मीडिया शिक्षक की यह जिम्मेदारी होनी चाहिये कि वह छात्रों को सोशल मीडिया के दौर में एक बेहतर पत्रकार के तौर पर विकसित करे ताकि वे फेक न्यूज और पोपेगेंडा न्यूज से बचें।

(पृ. 7)

मीडिया शिक्षा को लेकर यों तो और भी पत्रिकाएं निकल रही हैं पर इन दो अंकों में जो समग्र भारतीय अंचलों में शिक्षा की परिव्याप्ति रही उसका लेखा अनेक शोधार्थियों, विद्वानों तथा युवकों को काम करने की प्रेरणा देने वाला है।

इन विशेषांकों की प्राप्ति के लिए सी-235/ ए, दयानंद मार्ग, तिलकनगर, जयपुर-302004, मो. 094140-73466 से सम्पर्क किया जा सकता है।

- डॉ. तुक्तक भानावत

मोती का चुग्गा लिए राजस्थानी कहानियां

प्रो. जी. एस. राठौड़ मूलत: अंग्रेजी के लेखक हैं लेकिन उर्दू, पंजाबी, गुजराती, हिन्दी और राजस्थानी के भी अच्छे जानकार होने से इन भाषाओं की विविध विधाओं की ठावी रचनाओं का अनुवाद कर भी उन्होंने अपनी विशिष्ट पहचान दी है।

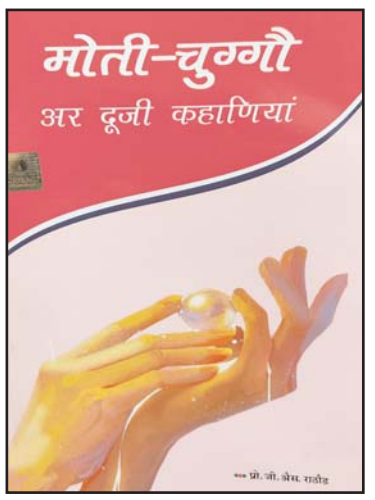

तीन अंग्रेजी पुस्तकें तो इनकी जर्मनी से ही प्रकाशित हुईं। फ्रेंच, अरबी, संस्कृत का भी इन्हें अच्छा ज्ञान है।

एशिया, अफ्रीका, यूरोप आदि 20 से अधिक देशों के भ्रमण ने भी इनके अनुभव-जगत को गहरा विस्तारा है। विविध पत्र-पत्रिकाओं में इनकी राजस्थानी में लिखी कहानियां प्रकाशित होती रहती हैं।

'मोती-चुग्गौ' नाम से यह इनका प्रथम राजस्थानी कहानी संग्रह है जिसका प्रकाशन उदयपुर के चिराग प्रकाशन द्वारा हाल ही में किया गया है।

पन्द्रह कहानियों के इस संग्रह में बेड नम्बर सेवन से लेकर वा मंगती, दादीसा, खोटो सिक्को, फरज रो फरक, बसन्ती, उठावणो, पण गुण्या नीं हा तथा म्हारी संवेदना जागी शीर्षक कहानियों के साथ मोती चुग्गौ सबसे बड़ी और सबसे अलग लन्दन, मिश्र, इजराइल की इतिहास प्रसिद्ध दास्तानों का हाल पाठकों को हालरिया सुनाती सोहक-मोहक लगती है।

वैसे भी संग्रह की सभी कहानियां पर पेटी नहीं होकर घर पेटी लगती हैं। ये कहानियां सभी चाल की हैं।

सिनेमाई दास्तान बताती हैं तो अंगुली पकड़ आंखिन दिखाती हैं। कथन कहती समै सुहाना बनाती हैं तो आतमभोगी अनुभवों से गुजरती हैं। आपसी संवाद बतकहनी हैं तो पथगामी रामासामी देती हैं। लोकलुभावनी हैं तो ललित-फलित देने वाली हैं।

प्रारम्भ में मण्डाण में इस कृति का माथा माण्डते राजस्थानी साहित्य के टणके आलोचक डॉ. कुन्दन माली लिखते हैं- 'कहानीकार प्रो. राठौड़ रै कहाणी-संग्रै री सिरै नाम कहाणी मोती-चुग्गौ असल में आपरै अन्तरराष्ट्रीय कथ्य, रहस्यात्मक कलेवर, वैश्विक स्तर री कूटनीतिक रणनीति री पड़ताल अर सस्पेंस वालै तेवर रै पांण आपरी भांत री अकेली अर मिसालजोग कहाणी है। आपरी साफ-सुथरी, विवेक सम्मत नजरियै, विचारोत्तेजक भाषा-भाव-कथ्य-अर्थ रै सांतरै सुमेळ अर मैताऊ विसयां रै सुतुलित निभाव रै आधार माथै मोती-चुग्गौ कहानीकार री कलम री ताकत अर तासीर रौ सांतरौ उदाहरण है।'

(पृ. 5)

कुल 134 पृष्ठीय यह सुन्दर छपाई वाली पुस्तक 150 रूपया कीमत लिये है।

-म. भा.

महावीर खांल्टा की तीन पुस्तकें

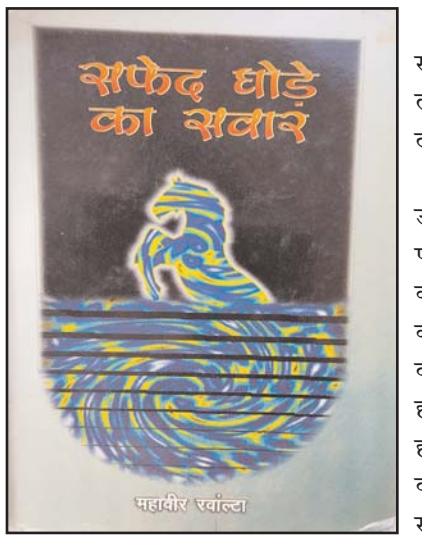

उत्तराखण्ड के महर गांव निवासी महावीर खांल्टा साहित्य की उपन्यास, कहानी, नाटक, कथा तथा लोकजीवन से जुड़ी सभी विधाओं के सशक्त हस्ताक्षर हैं। दो दर्जन से अधिक उनकी कृतियां प्रकाशित हो चुकी हैं।

'सफेद घोड़े का सवार' उनकी नाट्य कृति है जो उत्तराखण्ड के रवांई क्षेत्र में प्रचलित लोककथा के आधार पर लिखी गई है। यह कथा बड़ी दिलचस्प है जिसमें गड़रिये की भेड़ें खो जाने पर उसे ढूंढ़े भी नहीं मिलतीं तब थक हार कर वह एक ताल के किनारे बांसुरी बजाता है जिस पर वनदेवियां मुग्ध हों उसके प्राण हर लेती हैं। वह देवपुरुष हो रथदेवता के नाम से पूजित होता है।

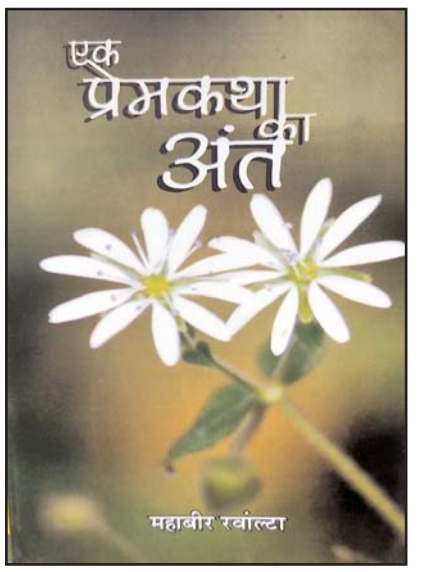

'एक प्रेमकथा का अन्त' भी रवांई क्षेत्र में प्रचलित गजू मलारी नामक लोकगाथा का आधार लिए नाट्य कृति है। दोनों कृतियों में लोकसंस्कृति के सुगंधी वातायन से देशज छटा की अभिराम रंगीनियों की दर्शना दर्शकों को विमोहित किये रहती है। अच्छा पक्ष यह है कि लेखक स्वयं सधे हुए रंगकर्मी होने से इन कृतियों में प्रदर्शनधर्मी लोकरंगों का पूर्ण निर्वाह हुआ है और दर्शकों ने भी लोकनाट्य प्रस्तुतियों-सा हमसफर किया है।

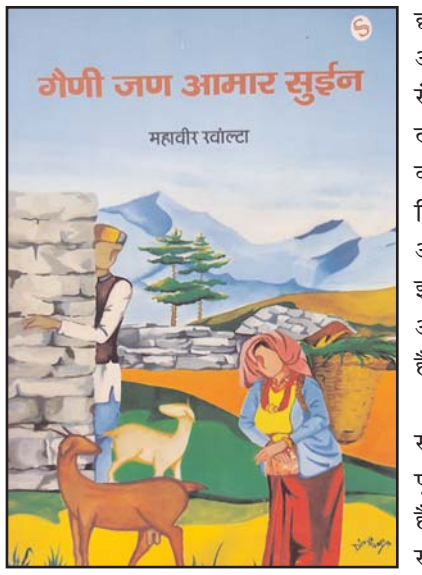

तीसरी कृति 'गौणी जण आमार सुईन' आंचलिकता को स्पर्श करती निज भाषा की कविताओं की है। इसका प्रत्येक पृष्ठ एक कविता लिये है। प्राय: सभी छोटी-छोटी कविताएं हैं जिनके सामने ही हिन्दी अनुवाद दिया है। ये कविताएं समसामयिक परिवेश को व्यक्त करतीं कोई-न-कोई सीख-सन्देश लिए हैं। भावाभिव्यक्ति सरल, सुबोध तथा सरस सुन्दर बनने से यह कृति ग्रामीण अंचलों में भी सबकी अपनी चहेती बनने में सक्षम तथा रंजनदायक हैं।

-डॉ. कहानी भानावत

स्मृतियों के शिखर (126) : डॉ. महेन्द्र भानावत

लोकजीवन में कानोंकान खबर (3)

बाजों से कानोंकान खबर :

बजते बाजों को सुन कानोंकान खबर का असर कम प्रभावी नहीं होता। वाद्य वादक को कौनसा संदेश पहुंचाना है इसके लिए वह अलग-अलग तरह के वादन की खूबियों से भलीप्रकार परिचित रहता है। ऐसी स्थिति में जनजातियों में ढोल का बहुत महत्व है।

शुभ-अशुभ घटना की सूचना देने, अचानक आई आफत की सूचना देने, मृत्यु प्रसंग की सूचना देने, चोर डकैती की सूचना देने, किसी दुर्घटना की आशंका से सबको सावचेत करने, प्रेत पिशाच का प्रकोप होने, देवी-देवता की छाया होने, बाल जन्म अथवा विवाह प्रसंग आने जैसे अनेक अवसरों पर आस-पास की घाटियों, मगरे-मगरियों तथा टेकरियों पर बसे लोगों को सूचना देने के लिए अलग-अलग बजत अथवा घाई का ढोल बजाया जाता है। इससे सभी को वास्तविक घटना अथवा आशय का पता लग जाता है। इस पर सभी स्थान-विशेष पर एकत्रित हो जाते हैं।

भीलों का नृत्यानुष्ठान 'गवरी' नाम से जाना जाता है जो रक्षाबंधन के दूसरे दिन से प्रारंभ होकर सवा माह तक दिनभर उसी चौखले में एक गांव से दूसरे गांव चलता रहता है। इसमें मादल तथा थाली मुख्य वाद्य है जिनकी बजाई सुनकर दूर-दूर तक गवरी नाच के आयोजन की खबर सुन लोगों का जमावड़ा आकर्षित होता है। राह चलते लोग भी गवरी-स्थल पर एकत्र हो दिनभर के विविध स्वांग देख अपना गंतव्य लेते हैं।

पथ विनोद :

ऐसे ही जहां-जहां मुसलमानों की अच्छी बस्ती है वहां ताजियों का जुलूस निकलता है। आगे ही आगे अड़बी ताशे की प्रभावी धुन सुन सबको जुलूस देखने की ललक हो आती है। नटों को जहां भी अपना खेल दिखाना होता है, ढोलक की लम्बी बजत प्रारंभ कर देते हैं जिससे उनके आगमन और खेल प्रदर्शन की सूचना हो जाती है।

ऐसी सूचनाएँ एक-दूसरे के पास कथन-दर-कथन से कानोंकान भी पहुंचती रहती हैं। इसी तरह डुगडुगी वादन से गांव में किसी जादूगर के आने की खबर पाने पर बालकों की खासी भीड़ इकट्ठी हो जाती है, ऐसे ही डुगडुगी से रीछ नचाने वाले, बंदर नचाने वाले सहज पहचान पा लेते थे।

अब तो ये खेल दिखाने वाले कहीं दिखाई नहीं देते। भवाई जाति वाले अपना खेल दिखाने के लिए भूंगल का वादन करते हैं। ख्यालों के प्रदर्शन से पूर्व नक्काड़ा वादन की किड़किड़ाहट सुन सहज ही उनके प्रदर्शन का अंदाजा लग जाता है। होली पर सब ओर चंग की धुन सुनाई देती है।

वाद्य वादन :

मनोरंजनकारी प्रदर्शनों में वाद्यों का बड़ा महत्व तथा प्रभाव रहा है। उनके बिना कई संस्कार तो प्रारंभ ही नहीं होते। गवरी के खेल, नटों के कौतुक या फिर रात-रात भर चलने वाले ख्याल-तमाशों में तो वाद्य वादन ही उनकी जान अथवा प्राणवायु होते हैं। उनके बिना उनकी कल्पना ही नहीं की जा सकती। ब्याह-शादी पर तो पग-पग पर ढोल बांकिया तथा अन्य बाजों की उपस्थिति से ही उनकी शोभा द्विगुणित होती है। ऐसे अवसर पर महिला-पुरुषों के नृत्य ही नहीं, लाड़ा-लाड़ी को सवारी देती घोड़ी तक को थिरकते देखा जा सकता है।

देवस्थानों में आरती तथा अन्य अवसरों पर वाद्यवादन की परम्परा देव-आह्वान के साथ-साथ गान-आह्वान की भी रही है। वाद्यों की अवाज सुनते ही भक्तों का रेला अपने-अपने घरों से निकल पड़ता है। दर्शनार्थी आरती तथा देव-दर्शन के समय तीर्थ स्थलों पर इकट्ठे वादन सुनते ही पंक्तिबद्ध होते दृष्टिगोचर होते हैं।

प्राय: हर मंदिर में घंटे-घंटियां लगी होती हैं। जो भी दर्शनार्थ आता है वह दर्शन पूर्व घंटा अथवा घंटी अवश्य बजाता है। इससे जो ध्वनि प्रसारित होती है वह बड़ी सुहानी तथा लम्बी गूंज देने वाली होती है। इससे वायु प्रदूषण मिटता है तथा नकारात्मक हवा नष्ट होकर सकारात्मक पड़ने वाला प्रभाव स्वास्थ्य के लिए भी उत्तम कहा गया है। आरती के समय तो एक साथ जहां ढोल-नगाड़े, झालर, थाली, शंख सम्मिलित रूप से जो स्वर देते हैं उसका प्रभाव कई शारीरिक तथा मानसिक रोगों के लिए औषध की तरह कारगर असर कर देवत्व दर्शनों को आनंदमय उल्लास प्रकट करता है।

कहानी कथन :

बचपन में दादी-नानी से सुनी कहानियों में इतना रस मिलता था कि सारे कामों से निवृत्त हो उनके पास चले जाते थे। वे प्रतिदिन ही कोई ना कोई नई कहानी सुनाती थी। उनके पास कहानियों का बड़ा खजाना था।

कुछ कहानियां तो ऐसी होतीं जिन्हें हर दिन सुनने की ललक बनी रहती थी। उन कहानियों में सब कुछ होता था। मनोविनोद, हँसी मजाक के साथ उनमें शिक्षाएँ भी छिपी रहती थीं। हौंसलों की उड़ानें भी उनमें होती थीं। भूत-प्रेत से लड़ने तथा बहादुरी दिखाने का जोश भी उनमें रहता था। जीवन में आने वाले संघर्ष तथा उनसे मुकाबला करने की क्षमता भी उनमें भरी रहती।

प्रेमाचार, कर्तव्य पालन, हेलमेल, सौहार्द्र तथा भाईचारे से जीवन जीने की कला के अलावा बुद्धि चातुर्य, ज्ञानवान होने तथा धैर्य के साथ सहनशील बनने की सीख भी मिलती थी। खोज की पगडंडियां नापने की उत्सुकता तथा इच्छित वस्तु की प्राप्ति का संतोष भी उनमें निहितार्थ लिये था।

कहानियां सपाट नदी की तरह बहतीं तो उबड़-खाबड़ रास्तों को पार करती, विराम खाती, विपरीत बहाव दर्शाती भी होतीं। छोटी-छोटी और बड़ी-बड़ी कहानियां, संवादमूलक कहानियां, किस्से-में-किस्से का मजा देती कहानियां, गीत के साथ वारता और वारता के साथ गीत की लहरी देती कहानियां, मानवेतर जीवों, अजीवों से बतियाती, बतकहती कहानियां, भूलों पर प्रायश्चित करती, अपराधों पर दंड देती कहानियां, फूल सी मुस्कराती, तितली सी हल्काती, पहाड़ सी टक्कर देती, चिंघाड़ती, हिनहिनाती कहानियां, कल्पना-सी-कमनीय, बुनाई-सी-महीन, गुफा-सा-गोचर और सुरंग-सा- सन्नाटा देती कहानियां, धरती-सी-धुन और आकाश-सी-सुर देती कहानियां, अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन और अनंत चरित्र की कहानियां न जाने कितने पूर्व और कितने-कितने पुनर्जीवन को आड़ोलित-विलोड़ित कर मनुष्य को बाल, बाल से युवा, युवा से बूढ़ और बूढ़ से बोध का संदेश देती हलरावण दुलरावण भरी सृष्टि साजती हैं।

इन्हीं सब में समग्र समस्त-ज्ञान-विज्ञान-सुज्ञान की समष्टि धाराएँ बीज से वृक्ष और वृक्ष से बीज का रोपण करती चलती खंड-खंड अखंड होती हैं। क्या नहीं है इन कहानियों में! इन कहानियों को सुनते वक्त हुंकारा चलता जिससे पता चलता कि सुनने वालों की उनमें रुचि बनी हुई है या बिना दिलचस्पी के उसे ऊंघ आ गई है या अर्द्ध निद्रा, पूर्ण निंदा के लोक में पहुंच गया है। कहावत भी है- 'हुंकारे वात आछी लागै।' हुंकारे से कहानी कहने वाला भी खबरदार बना रहता है।

खबर देती कथा :

ये कहानियां भी एक तरह से खबर ही हैं। जानकारी प्रदान करने का पागड़ा, पायदान हैं। घोड़े पर सवारी करने के लिए उसकी पीठ पर जीण पलाणा जाता है। उस पर बैठने के लिए उससे जुड़े तंग पागड़े में पांव सुरक्षित किये सवार को अदब से सवारी करनी पड़ती है। ये कहानियां भी मनुष्य रूपी घोड़े पर सवार करती हुई न जाने कितने, किन-किन लोकों तक की सैर कराती हैं।

बचपन की सुनी वह कहानी मुझे अब भी याद है जिसे सुन उत्सुकतावश मैं पत्रकारिता की ओर आकृष्ट हुआ। तब तो पत्रकारिता का न नामोनिशान था न किसी तरह की कोई संभावना ही नजर आ रही थी किंतु उस कहानी में मुझे खोजी पत्रकारिता के कई गुर मुखरित हुए लगे और आठ दशक होने आये, आज भी मुझे उससे कई तरह के जीवनानुभवों से पल्लवित सीख भरे संदेश प्राप्त होते हैं जो खोज की नई-नई नव्य-भव्य सुरंगों से पगडंडियां निखारकर निरंतर अथक बने रहने का सार्थक्य देते हैं।

तालाब की पाल पर कुम्हार ने बर्तन औंधे धर दिये। उधर आने जाने वाली गायों ने उन बर्तनों को फोड़ना शुरू कर दिया। यह देख कुम्हार ने गायों से पूछा, क्यों री गायें! मेरे बर्तन क्यों फोड़ती हो? गायें बोलीं - ग्वाला हमें चराता नहीं है।

यह सुन कुम्हार ग्वाले के पास जा बोला, ग्वाल भाई, गायों को क्यों नहीं चराने के लिए ले जाते हो? ग्वाला बोला- गायधनी, चराई के बदले रोटी नहीं देता है। कुम्हार गाय पालक से बोला, ग्वाले को गाय चराई की रोटी क्यों नहीं देते हो? यह सुन कुम्हार रोटी से जा बोला, रोटीबाई, क्या कारण है? रोटी बोली, आटा नहीं है। घट्टी चलती नहीं है। कुम्हार घट्टी के पास जा बोला, अरी क्यों आटा पिसती नहीं हो?

घट्टी ने जवाब दिया, पामणा मेरे ऊपर बैठे हुए हैं। चलूं तो कैसे चलूं? पिसूं तो कैसे पिसूं? इस पर कुम्हार मेहमान के पास गया और सवाल किया, पामणाजी। आप घट्टी पर क्यों विराजे हो? वे बोले- बरसात बहुत हो रही है। सब ओर पानी टपक रहा है। मेहमान का उत्तर सुन कुम्हार वर्षा के पास पहुँचा। बोला, बरखा रानी! कब से बरस रही हो? थमने का नाम क्यों नहीं लेती हो? वर्षा बोली, कुम्हार भाई, देख नहीं रहे हो। लगातार मोर बोल रहे हैं। कुम्हार मोरों के पास पहुँचा और लगातार बोलने का कारण पूछा। मोरों ने अपनी गर्दन ऊँची कर कहा- बोलेंगे, बोलेंगे और बोलते रहेंगे। हमारे दादाजी का जो देश है।

इस कहानी से कुम्हार की समस्या का समाधान हुआ हो या नहीं पर समस्या जानने का रास्ता अवश्य मिल गया। कुम्हार की तरह पत्रकार को भी खबर के ठेठ का पता लगाने के लिए कई पापड़ बेलने पड़ते हैं और इस दौड़ा-दौड़ी में, दौड़धूप में कई नवीन तथ्य भी हाथ लग जाते हैं। कारण तो कोई एक होता है पर उसके पीछे उस कारण से जुड़े कई मुद्दे हाथ लगते हैं जो बड़े दिलचस्प भी होते हैं। इस

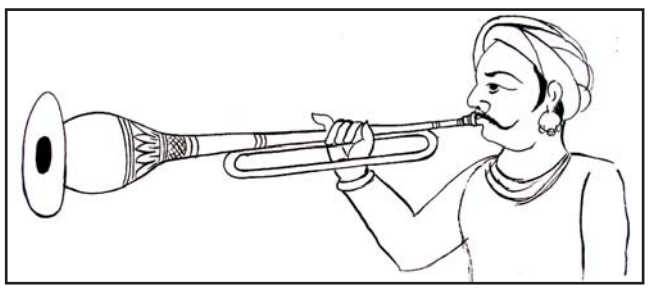

पड़ाव में जितने भी कारक होते हैं उनकी प्रकृति और परिस्थिति का अध्ययन भी अपने आप में बहुत कुछ जानने का मसाला देता है।

यह भी कि तब के जीवनधर्म का, समाज का कैसा परिवेश तथा सरोकार था और उसके रचाव के साथ सामुदायिकता का क्या रूप-स्वरूप था। तब मोर राष्ट्रीय पक्षी नहीं था पर अब, उसकी जैसी अस्मिता और ऐंठ थी, उसमें वे सारे गुण चिन्हित होते दिखाई देते हैं जिसके कारण उसने पूरे पक्षी जगत में राष्ट्र का प्रतिनिधि, राष्ट्रीय पक्षी बनने का गौरव अलंकृत किया।

सन् 1947 की देश की आजादी के बाद जब लोकतंत्र ने खुलकर श्वांस ली तब वोट प्राप्त करने के लिए प्रचार के तौरतरीके के भिन्न थे। ऐसे कई प्रसंग मेरे देखने में आये जब प्रत्याशी वोट की याचना करते-करते रो पड़ते। तब पैसाकौड़ी का जाल नहीं बिछता था। लेकिन लोगों का निरन्तर संपर्क बना रहता था। इससे वे अपनी शारीरिक क्षमता का ही सर्वाधिक दोहन करते देखे जाते। प्रत्याशी अपनी आर्थिक तंगी के कारण दूसरे प्रचारात्मक तरीके नहीं अपना सकता था। उसके मन में निरन्तर जीत-हार की ऊहापोह बनी रहती। इस कारण अपने वक्तव्य के दौरान वह अश्रुगलित भी हो जाता। इस अवस्था को लोगों ने भावुक राजनीति कहना प्रारंभ कर दिया था।

चुनावी खबर :

अब प्रत्याशी तथा उसके समर्थकों में वह स्थिति नहीं रही। वे जनता जनार्दन से रूबरू होने के लिए संचार के संसाधनों पर अधिक निर्भर रहने लग गये हैं। उदयपुर में ही मैंने चुनावी सभाओं में जवाहरलाल नेहरू, इंदिरा गांधी, अटलबिहारी वाजपेयी, चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य की सभाएँ सुनी हैं। अधिकतर नेताओं के भाषणों में मेवाड़ की प्रभुता, उसके पराक्रम, उसकी आन बान और शान की गौरव गाथाओं तथा महाराणा प्रताप के शौर्य-स्वाभिमान-स्वतंत्रता के लिए अडिग-अचल रहने के प्रण का ही गुणगान छाया रहता।

ऐसा भी हुआ जब बीच भाषण में हुड़दंग फैलाने के लिए विरोधी पार्टी के नेताओं के चेहरे वाले मुखौटे लगे बच्चे भेज दिये जाते। कई बार कुत्ते तथा अन्य मवेशी छोड़ दिये ताकि भीड़ तितरबितर हो सके। ऐसे लोग भी होते जो भाषण के दौरान मुखर होते। किसी प्रत्याशी की परवाह नहीं करते। उनकी वाणी में जोश तथा हौंसला रहता और जनता भी उनका साथ देने के लिए तत्पर रहती। मैंने राजस्थान के ऐसे कद्दावर नेताओं की सभाओं को भी सुना है जब उनके भाषण में ऐसा हुर्राटा लगा कि बीच भाषण से ही उन्हें आगे के लिए प्रस्थान करने के लिए मजबूर होना पड़ा।

सन् 2008 तक के चुनाव में जन संचार के नये साधनों का उपयोग नहीं देखा गया किंतु उसके बाद इंटरनेट का उपयोग शुरू हो गया। सन् 2013 के चुनाव में तो इंटरनेट ही नहीं, वेबसाइट, ब्लॉग, ट्विटर, फेसबुक, वाट्सएप क्रांति ने एक नई दस्तक देनी प्रारंभ कर दी। **-शेष पृष्ठ पांच पर**

शब्द रंजन

उदयपुर, रविवार 01 अगस्त 2021

सम्पादकीय

धीमी आंच पे कोरोना

कोरोना जैसे लगा वैसे ही भगा जाने को लगभग लग रहा है। यह तो रहा ही कि इसका नाम हर एक की जबां पर चढ़ गया पर एक आक्रान्ता के रूप में एक जबर्दस्ती का भय भी बैठ गया। उस भय का आलम यह रहा कि अनेकों ने इसका टीका भी नहीं लगाया।

यह भी रहा कि भारत पूरे विश्व में एक अलग तरह का राष्ट्र है। यह शुरू से ही देवभूमि के रूप में धर्म और अध्यात्म की धरती वाला देश है। कोई स्थल ऐसा नहीं मिलेगा जहां किसी-न-किसी देवी-देवता का निवास नहीं माना जाता है। ऐसे तपस्वी, संन्यासी, संत, महंत, ऋषि, महर्षि मिलेंगे जो किसी-न-किसी देवाराधना में निमग्न हैं। ऐसे अदृश्य भी साधक हैं जो हमारी दृष्टि तथा पहुंच से परे हैं।

जो देव बने पूज्य हैं वे हमारी तरह मनुष्य ही थे पर उन्होंने जो असाधारण साहसिक शौर्यपरक ऐसे कार्य किये जो अद्‌भुत, बेमिसाल हैं। इनमें से कइयों के नाम-ठाम, उल्लेख तथा पुख्ती जानकारी लोककण्ठों पर विभिन्न रूपों में गायकियों के माध्यम से सुनने को मिलती है। इनसे अधिक अनाम हुए जो हमारी जानकारी में नहीं हैं। बहुत से तो आंचलिक ही हैं जिन्हें बमुश्किल ही जाना जा सकता है।

जो भी हो, पर कुछ एक्सपर्ट यह भी कह रहे हैं कि कोरोना की दूसरी लहर बड़ी खतरनाक बीती है और अब तीसरी आने वाली है जो बच्चों पर अधिक असर करेगी। धुर गांवों में तो कहते हैं, कोई लहर ही नहीं रही। वहां न मास्क देखा गया न दूरी ही एक-दूसरे से बनी रही।

यह खतरा कस्बों तक भी शहरों से फैला और इसीलिए शहर तथा कस्बे के आसपास के गांव अधिक चपेट में आये। इस पर एक मित्र ने अच्छी दिल्लगी की। बोला कि एक पंडितजी थे जो पंडिताई के साथ बड़े विनोदी थे। वे गूढ़ ज्ञान देते फटाक से हास्य5विनोद कर बैठते। एक बार शब्दशक्ति का कमाल बताते बोले, ऊटपटांग शब्द कैसे बना बताओ। श्रोता अपने-अपने ढंग से बताते रहे तो पंडितजी ने कहा, ऊंट पर टांग रखने से ऊटपटांग शब्द बना। तो गांव के लोगों से सुनिये कोरोना से सम्बन्धित लतीफे। उनकी ज्ञान-शक्ति का अन्दाजा लगाइये कि उनकी बुद्धि के आगे तो पढ़ेलिखे कहां हैं?

मांगटजी मोठी पर उम्दा जानकारी

शब्द रंजन के 15 फरवरी 2021 के अंक में लोकदेव मांगटजी मोठी के सम्बन्ध में सुरेन्द्र अंचल ने बड़ी अच्छी तथा अब तक अनसुनी जानकारी से समृद्ध किया। गोरमघाट-खामलीघाट के घाटे के बारे में यह तो सभी को मालूम है कि उदयपुर से मारवाड़ जंक्शन जाने वाली रेलगाड़ी से उस परिक्षेत्र का दृश्य ही बड़ा अद्‌भुत प्राकृतिक छटा लिए दर्शित होता है। पूरी ट्रेन घूमती हुई लगती है और फिर ऊंचे चढ़ाव के लिए जो इंजन बदलना पड़ता है उसके लिए उपयुक्त जगह नहीं होने के कारण पूरी पटरी सहित इंजन घुमाया जाता है। ऐसा कमाल रेलवे में अन्यत्र कहीं हो, नहीं सुना गया। बरसात के मौसम में तो यह दृश्य शत-सहस्त्र गुना आनन्दित किये रहता है।

मांगटजी मोठी का जैसा चमत्कार पढ़ा वैसा अन्य देवताओं में प्रचलित हो, यह भी नहीं सुना। जो भी हो, शब्द रंजन के माध्यम से जो भी पढ़ने को मिल जाता है वह कुछ-न-कुछ नई सामग्री ही होती है जो अन्य पत्र-पत्रिकाओं में प्राय: पढ़ने को नहीं मिलती। कोई पच्चीस वर्ष पूर्व मैंने एक गज़ल लिखी थी-

बैठो हूं मन मार भाइला, आण बणी रे सामै।
म्हारा हिय री पीड़ परोसूं, कणी-कणी रे सामै।।

आज तो मैं स्वयं ही इस कथन से साक्षात् हुआ जाकर प्रत्यक्ष भोग रहा हूं। तब एक काल्पनिक भाव था। आज उसी के यथार्थ में जी रहा हूं।

- शिव मृदुल, चित्तौड़गढ़

-लेख है कि आज शिव मृदुल एकाकीपन महसूस किये हैं। अधिक समय नहीं हुआ जब उनकी जीवनसंगिनी सदैव के लिए उनसे बिछुड़ गई।

- सम्पादक

शब्द रंजन से साभार

शब्द रंजन में प्रकाशित सामग्री साहित्य-संस्कृतिपरक विविध वैविध्य लिए पढ़ने को मिल रही है। अब पत्रों के आदान-प्रदान की बजाय मोबाईल, ई-मेल, वाट्सएप जैसे माध्यम से पाठकों की प्रतिक्रिया प्राप्त होती रहती है। ऐसा भी होता है जब कुछ पत्रकार बंधु इसमें छपी सामग्री का अपने द्वारा सम्पादित पत्रों में उपयोग करते हैं।

ऐसा ही एक लेख खण्डवा निवासी रामनारायण अग्रवाल का 'लोककलाओं का भविष्य' शीर्षक से अमृतसर से प्रकाशित मार्च-दिसम्बर 2020 के बरोह अंक में सम्पादक शुभदर्शन ने तथा बीकानेर से प्रकाशित साप्ताहिक बीकानेर एक्सप्रेस के सम्पादक मनोहर चावला ने शब्द रंजन का सम्पादकीय 'लेखकीय स्वाभिमान का दौर' छापा है। **- संपादक**

देश में समान कानून कब बनेगा ?

- डॉ. वेदप्रताप वैदिक -

समान आचार संहिता का अर्थ यह नहीं है कि देश के 130 करोड़ नागरिक एक ही भाषा बोलें, एक ही तरह का खाना खाएं या एक ही ढंग के कपड़े पहनें। 1955 में हिंदू कोड बिल पास हुआ लेकिन यह कानून भी कई आदिवासी और पिछड़े लोग नहीं मानते। वे अपनी घिसी-पिटी रूढ़ियों के मुताबिक शादी, तलाक, उत्तराधिकार और गोद लेने के अपने ही नियम चलाते रहते हैं।

सभी धर्मों की अपनी-अपनी आचार-संहिता है, जो सैकड़ों या हजारों वर्ष पहले बनी थीं। आज की बदली हुई परिस्थितियों में उन्हें आंख मींचकर स्वीकार करना कहां तक ठीक है? क्या आज किसी राजा दशरथ की तीन रानियां और किसी द्रौपदी के पांच पति रह सकते हैं? जैसे हिंदू कोड बिल बना, वैसे ही भारतीय कोड बिल भी बनना चाहिए।

मोदी सरकार ने तीन तलाक प्रथा को खत्म करके समान आचार संहिता का रास्ता खोला है लेकिन जैसे नेहरु और आंबेडकर ने हिन्दूवादियों के घनघोर विरोध के बावजूद हिन्दू कोड बिल को पुख्ता कानून बनवा दिया, वैसे ही देश के अन्य धर्मावलंबियों के पारंपरिक कानूनों को भी बदलवाने का साहस दिखाना चाहिए। यदि बहुसंख्यक हिन्दू एकरुप कानून को मान रहे हैं तो मुसलमान, ईसाई और यहूदी क्यों नहीं मानेंगे? यूरोप और अमेरिका में रहने वाले किसी भी धर्म, किसी भी वंश, किसी भी जाति, किसी भी रंग के आदमी के लिए कोई अलग कानून नहीं है।

यदि सभी नागरिकों के लिए समान कानून बन जाए तो वह राष्ट्रीय एकता को मजबूत बनाने में विशेष भूमिका अदा करेगा। तब अंतरधार्मिक, अंतरजातीय और अंतरभाषिक विवाह आसानी से होने लगेंगे। यदि गोवा में पुर्तगालियों द्वारा 1867 में बनाई समान आचार-संहिता लागू हो रही है तो हमारी अपनी समान आचार संहिता पूरे भारत में क्यों नहीं लागू हो सकती है?

जिंक फुटबॉल अकादमी ने जीता राजस्थान स्टेट लीग 2021 का खिताब

उदयपुर (वि.)। जिंक फुटबॉल अकादमी ने जयपुर में आयोजित राजस्थान स्टेट मेन्स लीग 2021 खिताब जीतकर इतिहास रच दिया है। राजस्थान फुटबॉल संघ द्वारा

आयोजित इस लीग में राजस्थान यूनाइटेड एफसी, नीरजा मोदी एफए, रॉयल एफसी, एफसी ब्रदर्स यूनाइटेड, जयपुर एलीट एफसी, राजस्थान परफेक्ट एफसी, आइलैंड यूनाइटेड एफसी और जिंक फुटबॉल अकादमी ने भाग लिया। जिंक फुटबॉल ने लगातार दूसरी बार 'फेयर प्ले' अवार्ड भी जीता।

वेदांता हिंदुस्तान जिंक द्वारा शुरू की गई अकादमी ने इलीट जयपुर एफसी पर शानदार 10-2 से जीत के साथ अपने अभियान का समापन किया। इससे पूर्व जिंक फुटबॉल अकादमी ने रॉयल एफसी को 3-1, एफसी ब्रदर्स यूनाइटेड को 2-1, नीरजा मोदी एफए को 2-0, राजस्थान परफेक्ट फुटबॉल को 3-1 से हराया और एफसी ब्रदर्स यूनाइटेड के खिलाफ 3-3 से ड्रॉ खेला था। लीग में उनकी एकमात्र हार राजस्थान यूनाइटेड एफसी के खिलाफ हुई। जिंक फुटबॉल अकादमी के अमन खान ने टूर्नामेंट में कुल 8 गोल किए, जबकि आशीष माल्या ने टीम के लिए 6 गोल किए।

हिंदुस्तान जिंक लि. के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अरुण मिश्रा ने कहा कि जिंक फुटबॉल के लड़कों ने जिस तरह अपने से अधिक उम्र के खिलाड़ियों वाली टीमों का सामना किया, उससे मुझे इन पर गर्व है। वेदांता स्पोर्ट्स के अध्यक्ष अनन्य अग्रवाल ने कहा कि यह हमारे युवा लड़कों के लिए एक अविश्वसनीय उपलब्धि है।

अमिता बनी सावन बाईसा तथा कल्पना एवं विंकल रनरअप

उदयपुर (वि.)। महावीर युवा मंच संस्थान महिला प्रकोष्ठ का मंथन कार्यक्रम ओरियंटल पैलेस रिसोर्ट में

आयोजित हुआ। अध्यक्ष विजयलक्ष्मी गलुंडिया ने बताया कि इस अवसर पर सावन बाईसा प्रतियोगिता आयोजित हुई जिसमें अमिता डांगी विजेता तथा कल्पना भाणावत एवं विंकल मोगरा रनरअप रहीं। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि संस्थान संरक्षक राजकुमार फत्तावत, अध्यक्ष विनोद फांदोत, समन्वयक चंद्रप्रकाश चोरड़िया, महामंत्री मनीष गलुंडिया आशा कोठारी, भावना शाह, भारती करणपुरिया मौजद थीं।

शब भर

शब भर यूं जलते रहे ख़याल
खुली आंख तो सबा ने चौंका दिया
गुजश्ता रात कब ढलती गयी
तह दर तह बेलिबास होती गयी
आगोश में आये जो लम्हे
कहानी अपनी कहते गये
तड़फ तनहाई की, फुरकत भी बयां हुई
सीरी लफ्जों में फिर घोली गयी
दास्तां सुनाने में यूं सब मसरूफ हो गयी
जो दफन थी सीने में, अब लबों पर आगयी
गिले शिकवे चांदनी में घुल गये
शबनमी सुरों से शब लिपटती गयी
खरामा-खरामा खुमारी में सहर हो गयी
फलसफे रूहानी रूमानी इश्क
जजबातों के शब भर यूं पढ़े गये
जिंदगी कुछ नहीं 'एक मुट्ठी खाक है'
घर नहीं बसेरा एक 'वेटिंग रूम है'
लाईफ इज ए टैल टोल्ड बाई एन 'इडियट'
जिंदगी बरती गई
दबाकर हाथ लगावट भी जतायी गई
तसव्वुर में सजी बज्म हुयी नज्म
सहर में हुई फुर्र

- डॉ. ए. एल. दमामी

लोकतंत्र के सच्चे पालनहार !

जो
चुपके-चुपके
छल-बल से
लोकतंत्र के मस्तक को
लहूलुहान कर
करते रहे निरंतर वार।
अब
लगा मुखौटा काले मुंह पर
श्वेत झूठ का
दुनिया भर में बढ़-चढ़ कर
लोकतंत्र में निष्ठा के
गाते हैं गुण गान अपार।
अब
घोषित दागी दाग छुपाकर
खुद ही खुद को
महा मसीहा बता रहे हैं
घायल-मूर्छित
संविधान और लोकतंत्र के
सच्चे पालनहार।

- लक्ष्मण बोलिया

कहावतों के कहकहे (17)

(151) पुट्यो गमाई नै पोरो देणो
(152) राणीजी रा हाला
(153) मरो मां नै जीवो मासी
(154) मूंछा पै नींबू ठेरै
(155) पोपां बाई री पायगा

लोकजीवन में कानोंकान....

(पृष्ठ तीन का शेष)

खेल तमाशे :

इधर परम्परागत रूप से जनताजनार्दन में खासा मनोरंजन के जो साधन अत्यंत लोकप्रिय थे उनमें कई नये आयाम जुड़ गये। तुर्राकलंगी के रात-रात भर होने वाले ख्याल-तमाशों में लोक में प्रतिष्ठापित गाथा-आख्यानों की बंधी-बंधाई बंदिशों में जो खेल-प्रहसन सर्वप्रिय बने हुए थे उनमें भी चुनावी प्रचार-तंत्र के जुमले जुड़ते देखे गये।

तांगों में बैठकर भोंपू के माध्यम से चुनावी घोषणापत्र सुनाते। वोट मांगते कार्यकर्त्ताओं में चहकता उत्साह भी बड़े जोर शोर के साथ देखा गया। ढोलक वादन की करतूत से रस्सी पर बांस के सहारे अपना कौशल दिखाते, हवा में झूलते इतराते, वादक के चुनावी प्रचारजनित दोहों के साथ थाप खाते नट कलाकार को वोट की राजनीति में फर्रियां हिलाते देखा।

सभा स्थल पर चुनावी माहौल बनाने और भीड़ एकत्र करने के लिए हल्केफुल्के नाच-गान के प्रदर्शन और कवियों को काव्यपाठ से भी मजमा जमाते देखा। बांस पर खड़े होकर चलने वाले भी बड़ा कौतुहल जगाते। साईकिल पर माइक लगा चनाजोर गरम की तर्ज पर अपने प्रत्याशी के गुण-गौरव-गान द्वारा वोटरों को आकर्षित करने के उपक्रम भी खूब चले। प्रत्याशी के घर की महिलाएँ घूंघटप्रथा के चलते खुलकर प्रचार को नहीं निकलपाने की स्थिति में दो-दो, तीन-तीन समूह में घर-घर जाकर महिलाओं से संपर्क करतीं और वोट देने की आदि से अंत तक की समग्र प्रक्रिया की समझाईश करतीं।

प्रमुख प्रत्याशी भी बड़ी-बड़ी सभाओं के अलावा छोटी-छोटी नुक्कड़ सभाओं को अधिक तरजीह देते कारण कि ख्यातिलब्ध नेता हर जगह तो न पहुँच सकते और न उनकी गरिमा के अनुसार वे जहां जब चाहें तब भाषण ही दे पाते। प्रचार का दौर सुबह से देर रात तक बड़ी गहमागहमी लिए चलता। ऐसा भी हुआ जब वदावदी में कोई डिजर्विंग केंडीडेट खड़ा नहीं कर नाउम्मीद प्रत्याशी खड़ा कर दिया जाता तो उसी के दल के सदस्यों में मायूसी छा जाती। वे ऊपर से तो अपनी पार्टी का ही प्रचार करते मिलते किंतु भीतर से उसे पराजय दिलाने की कोशिश करते। इसे 'भीतर घात की राजनीति' करना कहते और परिणाम भी उसी तरह का हाथ लगता।

गांवों तथा शहरों में माहौल सर्वथा जुदा-जुदा रहता। चुनावी रंगत और रौनक से अटे महोत्सवी माहौल गांवों में मेलों सा मजा देते थिरकते। महिलाओं में भिन्न तरह का माहौल सबको शकुन देता। समूहबद्ध होकर गीतों की गंगा उनके कंठों से खलक पड़ती। छोटे-छोटे गांवों में आनंद के उछाव अधिक मोहित किये लगते।

तब वोट डालने के बूथ दूर-दूर होते। सड़कें भी बेहाल कर देने वाली धूलधक्कड़ लिये होतीं। रास्ते उबड़खाबड़ पगडंडियों के सहारे खेत-पहाड़ियों को लांघते-लांघते पहुंचने वाले होते। ऐसी स्थिति में महिलाएँ एकदिन पहले ही एक-दूसरी के पास खबर कर देतीं। कहाँ से, किस समय, किसी चौक, चौराहे या देवस्थल पर इकट्ठी होना है, खाना भी साथ लेकर चलना आदि की ठाबंद हिदायतें प्राप्त कर बड़े सवेरे जल्दी उठ घर का कामकाज निबटा कर अच्छे ओढ़पैरण के साथ खुशहाल रूप में आ जातीं।

समूह रूप में उनका रैला टोलियों में बंटता गीतों की बहार देता चल पड़ता। उनके द्वारा गाये गये गीतों में भरपूर मनोविनोद रहता। गीतों में जनप्रतिनिधि को दूल्हे की उपमा दी जाती और मतदाता बराती के रूप में बताये जाते। इन गीतों में खाने के लिए तरह-तरह की मिठाइयों का जिक्र रहता। व्यंग्य की बौछार भी चाबुक जैसी होती जिसमें नेताओं के चलते-चलते जूते घिस गये हैं। नये जूते के लिए मोची बुलाया गया है। वह नोकदार तीन तलों की मोजड़ियां लेकर आया है।

जनजाति माहौल :

समूह रूप में मेले सा ठाठ देता महिलाओं का रेला विविध रंगी वस्त्राभूषणों में बड़ा सजा-धजा लगता। गीतों के कंठ कम उम्र की बालिकाओं से लेकर बुजुर्ग और धीरे-धीरे चलती उम्रपार खांखड़ डोकरियों के भी खुल पड़ते। विवाह में भी ऐसा उत्साह नहीं होता जैसा इस दौर में दिखाई देता। किसी स्थान विशेष से प्रस्थान करते समय के बोल होते -

हालो ए सै हेल्यां आपां वोट देवा चालां
वोट देवा चालां नै हेली मेली आवां
हालो ए सै हेल्यां आपां लापी चौखा खावां
वोट देवा चालां नै.....

इसी प्रकार लापी-चौखा की जगह हीरो-पूड़ी, जलेबी-मुरकी, घेवर-चक्की जैसी मिठाइयों के नाम जोड़-जोड़ कर चलती हुई श्रम का परिहार करतीं। आदिवासी क्षेत्रों के गीत उनकी अपनी वाणी तथा जीवन-परिवेश से जुड़े होते। वानगी के बतौर-

वीन राजा की मारली हाटो मा,
बापो भी हाट बजार मा
हेडतु फिरतु बोलनिया के बजार मां
लाड़ी ववु की ओडनी रे कीमत करे
वीन राजा वागलियो मोलावे।

अर्थात नेता दूल्हे के रूप में लवाजमे के साथ हाट बाजार आये हैं। इधर-उधर घूम रहे हैं। वोट की ओढ़नी के लिए मतदाता दुकानदार बनिये से मोलभाव कर रहे हैं। और यह भी-

हिंदवारा नू मोसी आयो। मोजरी लायो।
वेवन सेल माय लाया।
मोसी कोंय लायो रे, मोजरी लायो।

अर्थात नेताओं के चलते-चलते जूते घिस गये हैं। उनको नये जूते पहनाने के लिए हिंदवारा गांव से मोची आया है। अपने साथ क्या लाया है, पूछने पर बोला मोजड़ी लाया हूँ।

देखने की बात यह है कि सब-की-सब महिलाएँ अपढ़ और घोर निरक्षर हैं। कभी कोई स्कूल नहीं देखा है। देखा तो कुछ भी नहीं है। काला अक्षर उनके लिए भैंस बराबर है। मोटी रेजी की ओढ़नी से उनका घूंघट ढका हुआ है। घर में हर समय अंधेरा व्याप्त है। कहीं कोई बीजली नहीं है। अकेले में भी उसके घूंघट के पट आँखों को ओट दिये रहते हैं। दिनभर खेतीबाड़ी और घर का सारा काम करती रहने पर भी वे खुशमिजाज हैं। थकीहारी नहीं हैं और खुशी के मौकों पर खुशहाली से उनका अंग-प्रत्यंग खिलखिला पड़ता है।

अवसर कोई हो, वे गीतों से उसे और अधिक रसमय, आनंदमय और उत्साहमय बना देती हैं। कहां से आते हैं ये गीत? कौन बनाता है इन्हें? क्या कोई प्रशिक्षण होता है इन्हें गाने से पूर्व? ऐसे अनेक अवसरों के, अवसर-अवसर के गीत जब वे समूह में जुड़ती हैं तब उनके कंठों पर अनायास ही तैराकी दिये शोभित होते रहते हैं।

यही लोक है। लोकाचारों का लोकानंद है। लोक में सब समूहबद्ध हैं। लोक स्वयं समूहबद्ध है। पूरा-का-पूरा गांव जुड़ता है। वहां कोई अकेला नहीं है। ठाला नहीं है। ठसक या कि कसक नहीं है। सबके बीच संवाद का निरंतर संचार होता रहता है। दिन तो जगा रहता है पर रात भी कभी सोती और सुस्त नहीं होती है। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने यों ही नहीं लिखा-

बंद नहीं अब भी चलते हैं नियटी नटी के कार्यकलाप।
पर कितने एंकात भाव से, कितने शांत और चुपचाप॥

खबर देते माड़साब :

अपने गांव कनोड़ में भी सरकारी मिडिल स्कूल में एक हेडमास्टर उमादत्तजी शर्मा थे। वे फर्रूखाबाद के आसपास यूपी के थे। अकेले रहते थे पर बड़े मिलनसार और बोलकु थे। उनकी बोली विशेष टोन लिए सबको आकर्षित किए रहती। कभी साबुन से न कपड़े धोते न नहाते। मटमैली एक लंगी धोती, कुरता, ऊपर कोट, कोट की जेब में गांधी घड़ी, सिर पर टोपी तथा हाथ में लाठी रखते। बड़े सादगी वाले, साधारण और सहज थे। स्वयं भोजन बनाते। सब्जी में मिर्च के नाम पर एक पूरी मिर्च घुमा देते और फिर उसे धागे से बांध लटका देते। इस तरह एक मिर्च पूरा महीना निकाल देती।

सुबह-शाम घूमने निकलते तब उनका खास जनसंपर्क हो जाता। छोटे-बड़े सबसे प्रेमभाव से मिलते। समाचार सुनाते। देश के हालात पर चर्चा करते। पारिवारिक कुशलक्षेम पूछते। वे पोस्टऑफिस भी संभालते। उनके कोट की बड़ी-बड़ी जेबों में पोस्टकार्ड लिफाफे रहते। आवश्यकतानुसार वे रास्ते चलते यह सेवा करते।

उन दिनों पूरे गांव में दैनिक अखबारों में दिल्ली से एक अंग्रेजी तथा हिन्दी अखबार आता। उमादत्तजी माड़साब उनसे ताजी खबरें सुनाते और अपनी निष्पक्ष राय भी देते। हम लोग बाहर पढ़ने वाले गर्मियों की छुट्टियों में पोस्टऑफिस जमा हो जाते। डाक आने पर माड़साब हमें साप्ताहिक अखबार पढ़ने को देते। हम वहीं देखकर उन्हें दे देते। इस तरह वे शिक्षा, संस्कृति संबंधी वातावरण बनाये रखते।

मेरे जैसे व्यक्ति उन्हें आज भी याद करते हैं। वहीं उदयपुर, जोधपुर, जयपुर से प्रकाशित साप्ताहिकों को देख मेरे जैसे व्यक्ति ने प्रकाशनार्थ अपनी कविताएँ भेजना प्रारंभ किया। मेरी दृष्टि में तब डॉ. नरेन्द्र भानावत, विपिन जारोली, सुरेन्द्र वया, श्रीचंद्र डूंगरवाल, डूंगर पोखरना और अन्य कई छात्र उन दिनों साहित्य सजृन के लिए अपनी पहचान बनाने निकले। विपिनजी और हम दोनों भाई तो इसी क्षेत्र में निरन्तर कार्यरत रहे। साहित्य-संचार की यह बड़ी देन उमादत्तजी माड़साब से प्रारंभ होकर परवान चढ़ती रही। यह समय 1945 से 65 तक का रहा।

- समाप्त

अपना देश अपनी संस्कृति

'बाबूजी, एक पइसो' वाली वह भिखमंगी

यह दास्तान एक भिखमंगी की है पर भीख मांगने वाले भी कई किस्म-वर्ग के होते हैं। यह भी सुनने में आया कि भिखमंगों का एक सरदार, ठेकेदार भी होता है जो गरीबों को भिखमंगे बनाकर उनसे भीख मंगवाने का धंधा भी करता है। कुछ भिखमंगे ऐसे भी होते हैं जो कइयों से आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होते हैं मगर वे भिखमंगे ही बने रहकर सहानुभूति प्राप्त कर अच्छी कमाई कर लेते हैं। तीर्थस्थलों पर भांत-भांत के भिखमंगे तो हर जगह होते ही हैं।

मैं जिस भिखमंगी की बात कर रहा हूं उसकी कहानी ही बड़ी अजीब है। वह प्रत्येक शनिवार को मेरे ऑफिस आती और हल्की सी मुस्कान देती मात्र 'बाबूजी, एक पइसो' कहकर खड़ी रहती। मैंने उसे कभी निराश नहीं किया। यह सोचकर कि यह बड़ी संतोषी है। इसे केवल एक पैसे की ही तो चाहना है।

एक दिन मैं अपने ऑफिस के बाहर की बैंच पर बैठ गया और उससे सवाल किया कि एक पइसे से क्या तुम्हारा गुजारा चल जाता है। तुम दिखने में तो भली गृहस्थ महिला दिख रही हो। उदयपुर की रहने वाली भी नहीं लग रही हो। उसने धीरे से मेरी बात सुनी। मैंने इस बीच उसे उचित आसन दे बिठाई। चाय पिलाई।

वह बड़ी खुश हुई और बोली, 'बाबूजी, आपने मुझे ठीक पहचानी। मैं रविवार को छोड़ शेष छहों दिन भीख मांगने का काम करती हूं। भीलवाड़ा की रहने वाली हूं। मेरे परिवार है पर कमाई ज्यादा नहीं है। बच्चा अभी छोटा है। पढ़ाई कर रहा है। हर दिन भीलवाड़ा से उदयपुर रेल से आती हूं। रेल में मेरा कोई टिकिट नहीं मांगता है। उदयपुर में हर दिन मांगने की अलग-अलग जगह है। शनिवार को चेटक सर्कल है। प्रतिदिन अच्छा पैसा हाथ लग जाता है। सुबह पहली गाड़ी से आती हूं और शाम को आखिरी गाड़ी से घर पहुंच जाती हूं।'

पूछने पर उसने यह भी बताया कि भीलवाड़ा में मांगने में शरम महसूस करती हूं। वहां मेरी जाति-बिरादरी के लोग हैं। उसमें कोई भीख नहीं मांगता है इसलिए यहां आ जाती हूं। रविवार को अपने परिवार के साथ आनन्द से रहती हूं। बच्चा जब थोड़ा बड़ा हो जायेगा और पढ़ जायेगा तब उसका विवाह कर दूंगी। बहू आने पर फिर मांगने का यह काम भी बंद कर दूंगी।

यह बहुत पुरानी बात है। उसके बाद वह सालेक भर तो आती रही पर उसके पश्चात मैंने उसे कभी नहीं देखा। मुझे लगता है कि उसने अपने परिवार वालों को भी भनक नहीं दी होगी कि वह उदयपुर भीख मांगने आती-जाती है। गृहस्थ जीवन में ऐसी महिलाएं भी होती हैं जो अपने परिवार के भरणपोषण और संतान की खुशहाली के लिए स्वयं अपने विवेक से हाथ बटाकर आदर्श उपस्थित करती हैं।

चमेली की खोज

वह महाराणा स्वरूपसिंह का जमाना था। गिर्वा में जगराम रेबारी रहता था। वह बड़ा चालाक, कबाड़ी और चालू प्रवृत्ति का था। उसके पास के गांव में रामदास और उसके साथ चमेली रहती थी। ब्याव शादी तथा विशिष्ट मांगलिक अवसरों पर गा-बजाकर अपना पेट पालते। इससे वे आर्थिक तंगी ही झेलते रहे। इसका फायदा उठाते हुए जगराम ने अवसर देख चमेली को अपनी बना ली।

रामदास चमेली के बिना परेशान रहा। कई दिनों तक उसकी खोज करता रहा। इस बीच उसे जगराम पर शक हुआ। उन्हीं दिनों जगराम महाराणा की पशुशाला का जमादार बन उदयपुर में रहने लगा । रामदास ने हिम्मत नहीं हारी। वह जगराम के पास गया और चमेली बाबत पूछताछ की। इस पर जगराम बिगड़ गया और झल्ला कर बोला कि तू कोई थानेदार है जो खोद-खोद कर पूछ रहा है।

रामदास वहां से कोतवाल के पास गया। कोतवाले ने पूरी बात सुनी। वह जगराम के घर गया और चमेली से पूछताछ की। चमेली ने अपने को जगराम की पत्नी रेबारन बताया। इस पर कोतवाल ने रामदास को बुरी तरह डांटा और चुप कर दिया।

रामदास ने हार नहीं मानी। वह न्याय के लिए राजदरबार पंहुचा और अपनी व्यथा कह सुनाई। महाराणा ने दीवान को जांच करने को कहा। दीवान ने जांच कराई किन्तु रामदास को न्याय नहीं मिला। हारिये न हिम्मत बिसारिये न हरि नाम को मन में बिठा जब भी उसे मौका मिलता वह राजदरबार पहुंच जाता और महाराणा से विनती करता- अन्नदाता, मेरे साथ न्याय नहीं हुआ है।

महाराणा के मन पर उसकी यह छवि अंकित हो गई। वे सोचने लगे कि रामदास के साथ अन्याय हुआ है तभी तो वह बार-बार आ रहा है। सच्चाई का पता लगाने के लिए उन्होंने जगराम को जमादार से सूबेदार बना दिया और आदेश दिया कि उसकी पत्नी को महारानी की सेवा में भेजी जाए।

जगराम महाराणा के इस निर्णय से बहुत खुश हुआ। चमेली उससे भी अधिक खुश हुई। एक दिन जनाना महल में नाच-गान का कार्यक्रम था। महाराणा भी उसमें उपस्थित हुए। उन्होंने सभी दासियों को ढोलक बजाने का हुक्म दिया और कहा कि जो सबसे अच्छी ढोलक बजाएगी, उसे ईनाम दिया जाएगा।

सभी दासियों ने अपनी-अपनी होशियारी से ढोलक वादन किया किन्तु चमेली ने जो करिश्मा दिखाया वह लाजवाब था। महाराणा बोले कि तुम जाति की रेबारिन हो। रेबारियों की औरतें इतनी बढ़िया ढोलक बजा ही नहीं सकती। इस पर चमेली से कुछ भी बोला नहीं गया। जिस बात को छिपाती रही वह यहां उजागर हो गई।

चमेली ने लज्जावश अपना सिर झुकाते हुए कहा- हुजूर गुस्ताखी माफ हो। मैं रामदास की पत्नी हूं। गरीबी से तंग आकर ही जगराम के साथ भाग गई थी। महाराणा ने रामदास को बुलाकर चमेली सौंपी। दोनों को नौकरी दी और जगराम को सेवा बाहर कर दिया।

- म. भा.

बाजार / समाचार

एचडीएफसी बैंक के शुद्ध लाभ में वृद्धि

उदयपुर (वि.)। एचडीएफसी बैंक ने वित्त वर्ष 2022 की पहली तिमाही में सालाना आधार पर 16.1 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की। चालू वित्त वर्ष में 30 जून 2020 को समाप्त तिमाही में समीक्षाधीन तिमाही के दौरान बैंक का शुद्ध लाभ बढ़कर 7729.6 करोड़ रुपए हो गया है।

बैंक की शुद्ध ब्याज आय 30 जून को समाप्त तिमाही के लिए 15,665.4 करोड़ रुपए से बढ़कर 17,009.0 करोड़ रुपए हो गई है। बैंक के अनुसार, समीक्षाधीन तिमाही के लिए प्रावधान और आकस्मिकताएं 30 जून को समाप्त तिमाही के लिए 3891.5 करोड़ रुपए से 4830.8 करोड़ रुपए थी। 30 जून, 2021 को समाप्त हुई तिमाही में बैंक का कुल राजस्व 30 जून, 2020 को समाप्त हुई पिछले साल की इसी तिमाही में 19,740.7 करोड़ रु. से 18.00 प्रतिशत बढ़कर 23,297.5 करोड़ रु. हो गया। 30 जून, 2021 को समाप्त हुई तिमाही के लिए कुल ब्याज आय 30 जून, 2020 को समाप्त हुई तिमाही के लिए 15,665.4 करोड़ रु. से 14.4 प्रतिशत की एडवांस वृद्धि एवं 4.1 प्रतिशत के मुख्य कुल ब्याज मार्जिन के साथ 17,009.0 करोड़ रु. रही। डिपाजिट पर बैंक के निरंतर फोकस ने 126 प्रतिशत का सेहतमंद लिक्विडिटी कवरेज अनुपात बनाए रखने में मदद की, जो नियामक जरूरत के मुकाबले काफी ऊँचा है।

आईसीआईसीआई बैंक एचपीसीएल सुपर सेवर को-ब्रांडेड क्रेडिट कार्ड लॉन्च

उदयपुर (वि.)। आईसीआईसीआई बैंक ने हिंदुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लि. (एचपीसीएल) के साथ एक को-ब्रांडेड क्रेडिट कार्ड लॉन्च किया है ताकि उपयोगकर्ता कई क्रेडिट कार्ड का उपयोग करने के लाभ और रिवॉर्ड पॉइंट प्राप्त कर सकें।

आईसीआईसीआई बैंक के हैड- अनसिक्योर्ड एसेट्स सुदीप्त रॉय ने कहा कि 'आईसीआईसीआई बैंक एचपीसीएल सुपर सेवर क्रेडिट कार्ड' नामक यह कार्ड ग्राहकों को फ्यूल के साथ बिजली, मोबाइल, ई-कॉमर्स पोर्टल, बिग बाजार और डी-मार्ट जैसे डिपार्टमेंटल स्टोर पर सर्वश्रेष्ठ रिवार्ड्स और बेनिफिट्स प्रदान करता है। वीजा द्वारा संचालित यह कार्ड इसी तरह के दूसरे ऐसे कार्ड्स के बीच अद्वितीय है, जो आमतौर पर सिर्फ एक श्रेणी के खर्च पर ही लाभ प्रदान करते हैं।

कैप्टन पॉलीप्लास्ट के बेहतर परिणाम

उदयपुर (वि.)। बीएसई पर लिस्टेड कैप्टन पॉलीप्लास्ट के प्रोडक्ट्स की बढ़ती डिमांड के चलते सालाना आधार पर ऑपरेटिंग रेवेन्यू 64.3 करोड़ रुपए रहा है। वहीं, कंपनी के ईबीआईटीडीए में 3 प्रतिशत का उछाल आया है। सालाना आधार पर ईबीआईटीडीए 7.4 करोड़ रुपए रहा। कंपनी के मुनाफे में भी 12.5 प्रतिशत का उछाल देखने को मिला है। टैक्स चुकाने के बाद कंपनी का प्रॉफिट 2.6 करोड़ रुपए रहा है। रिपोर्ट के मुताबिक, सीपीएल को कोर बिजनेस के अलावा अपने कॉम्प्लीमेंट्री प्रोडक्ट्स से भी अच्छी ग्रोथ की उम्मीद है। कंपनी का कोर बिजनेस माइक्रो इरिगेशन प्रोडक्ट्स का है। इससे कंपनी को 95 फीसदी रेवेन्यू होता है। कॉम्प्लीमेंट्री प्रोडक्ट्स का भी रेवेन्यू शेयरिंग बढ़ने की उम्मीद है। इनमें सोलर इक्विपमेंट्स, वॉटर सॉल्यूबल फर्टिलाइजर जैसे प्रोडक्ट शामिल हैं। कंपनी के चेयरमैन और मैनेजिंग डायरेक्टर रमेशा खिछाड़िया के अनुसार सोलर ईपीसी सेगमेंट में टिकाऊ प्रोडक्ट्स/टेक्नोलॉजी पर कंपनी का फोकस है और 2022 तक भारत में रिन्यूबल एनर्जी कैपेसिटी को 175 गीगावॉट तक बढ़ाने के लिए सरकारी अभियान में भाग लेने में मदद करेगा।

85,000 सफल आईवीएफ प्रिग्नैंसी

उदयपुर (वि.)। इंदिरा आईवीएफ ने 85,000 सफल आईवीएफ प्रिग्नैंसीज पूरी करते हुए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। अपने चिकित्सा विशेषज्ञों, इम्ब्रायोलॉजिस्ट्स और तकनीकी कौशल के दम पर, इस सिंगल स्पेशियाल्टी चेन ने वर्ल्ड आईवीएफ डे से पूर्व इस उपलब्धि की घोषणा की।

इंदिरा आईवीएफ के मुख्य कार्यकारी अधिकारी और सह-संस्थापक डॉ. क्षितिज मुर्डिया ने कहा कि इंदिरा आईवीएफ ने इनफर्टिलिटी से जुड़े कलंक को दूर करने के लिए अथक प्रयास किया है। यह 700 से अधिक शहरों में 2100 से अधिक जागरूकता शिविर आयोजित कर चुका है ताकि इस विषय से जुड़ी चर्चाओं को सामान्य रूप दिया जा सके। भारत में गर्भधारण करने की अक्षमता के लिए गैरआनुपातिक रूप से महिलाओं को जिम्मेदार माना जाता है, जबकि जबकि शोध से पता चला है कि इनफर्टिलिटी के लिए महिला और पुरुष दोनों ही भागीदार हो सकते हैं। कई बार तो बच्चा पैदा करने के लिए अवैज्ञानिक तरीकों का भी सहारा लेते हैं। इंदिरा आईवीएफ के देशभर में 96 केंद्र हैं, जिनकी प्रमुख उपस्थिति टियर 2 और टियर 3 शहरों में है, जो सबसे दूरस्थ स्थानों में भी बांझपन का एक सुलभ समाधान प्रदान करता है। मार्केट लीडर, इंदिरा आईवीएफ उन जोड़ों को किफायती गुणवत्तापूर्ण उपचार देने पर केंद्रित है जो स्वाभाविक रूप से गर्भधारण करने के लिए जटिलताओं का सामना करते हैं। उच्च सफलता दर और रोगी केंद्रितता ने इसे उन लोगों के लिए एक विश्वसनीय भागीदार बना दिया है जो माता-पिता बनने की इच्छा रखते हैं।

सरकारी अनुमति से हो रहा आरटीडीसी होटल जयसमंद का रिनोवेशन कार्य : सुहालका

उदयपुर (वि.)। जयसमंद स्थित 'आरटीडीसी होटल जयसमंद' को लेकर पिछले कुछ दिनों से प्रचारित किए जा रहे भ्रामक और बेबुनियाद तथ्यों को खारिज करते हुए होटल को लीज पर लेने वाले लाइसेंसी एपिटोम डेस्टिनेशंस के निदेशक सुनील सुहालका ने प्रेसवार्ता में बताया कि होटल जयसमंद में रिनोवेशन का कार्य विभिन्न स्तरों पर सरकारी अनुमति के बाद नियमों के अनुरूप ही शुरू किया गया। इसमें कहीं पर भी न तो कानून की अवेहलना हुई, न ही पारिस्थितिकी तंत्र को कोई नुकसान पहुंचा है। प्रेसवार्ता में होटल कजरी के महाप्रबंधक सुनील माथुर, सहायक अभियंता उपखंड उदयपुर मनोजकुमार चतुर्वेदी, सूर्यप्रकाश सुहालका, जितेश व्यास, सुशील जैन, जगदीश पालीवाल, दीपक मेवाडा और सैयद मुजफ्फर भी उपस्थित थे।

सुहालका ने बताया कि उपरोक्त होटल के साथ तीन अन्य आरटीडीसी की सम्पत्तियां उनकी फर्म को अप्रेल 2021 में 5+5 वर्ष के अनुबंध पर दी गई है। आरटीडीसी होटल जयसमंद में रिनोवेशन कार्य जुलाई में आरंभ किया गया है। उक्त प्रोपर्टी जब हमें दी गई तब वह अत्यंत जीर्णशीर्ण, दयनीय व खंडहर की स्थिति में थी। ऐसे में नई तकनीक से मरम्मत तथा रिनोवेशन कार्य करवाए बिना संचालन संभव नहीं था। इसकी स्वीकृति राजस्थान पर्यटन विकास निगम लि. द्वारा अनुबंध की शर्तों के तहत प्रदान की गई। इसी रिनोवेशन कार्य में भवन में टूटे व क्रेक हो चुके स्विमिंग पूल की दीवारों को मजबूत कर ठीक कर आरसीसी से दीवारें भरी जानी थी। कार्य के आरंभ होते ही कुछ अज्ञात तत्वों ने अफवाहें फैलाते हुए विरोध शुरू कर दिया। उनकी ओर से दी गई जानकारियां व तथ्य न सिर्फ भ्रामक हैं बल्कि फर्म तथा टूरिज्म सेक्टर सहित आरटीडीसी की गरिमा को गंभीर ठेस पहुंचाने वाले हैं।

सुहालका ने बताया कि होटल पाल पर स्थित नहीं है। राजस्व रिकॉर्ड में उसका खसरा नंबर 2282 व नक्शा ट्रेस में उसकी स्थिति पाल से अलग है जबकि जयसमंद पाल का खसरा नंबर 2284 है जो कि नक्शे में भी अलग दर्शाया गया है। उक्त महल (होटल) पाल के उत्तरी छोर पर स्थिति अरावली पर्वतमाला की पहाड़ी को काट कर तत्कालीन महाराजा ने बनाया था। महल की फर्शी के नीचे काटी गई पहाड़ी की चट्टानें मौजूद हैं। स्विमिंग पूल होटल में पर्यटन सुविधाओं का अभिन्न अंग है। बरसों से जर्जर हुए इस स्विमिंग पूल सहित भवन के अन्य समस्त हिस्सों को मजबूत रिनोवेशन की आवश्यकता है। इसी क्रम में समस्त कार्य स्वीकृति के साथ विशेषज्ञ विभागीय इंजीनियर की देखरेख में करवाए जा रहे हैं। ऐसे में इस पुरानी विरासत (होटल) का पुनरूद्धार व मरम्मत का काम कर पुन: पर्यटकों की सुविधा सुचारू करना बड़ी आर्थिक व मानसिक चुनौती है।

सुहालका ने कहा कि गत दिनों विभाग की ओर से इंजीनियर ने संपूर्ण मुआयना किया तथा प्राथमिकता के आधार पर पुल की सभी दीवारों को बनाने हेतु कहा ताकि भवन व पाल की सुरक्षा की जा सके। सुहालका ने कहा कि रिनावेशन कार्य से जयसमंद पाल को कोई खतरा नहीं है।

अनिल अग्रवाल मुंबई रत्न से सम्मानित

उदयपुर (वि.)। प्रमुख उद्यमी, समाजसेवी एवं देश के प्रमुख मेटल, मिनरल्स, ऑयल एण्ड गैस उत्पादक समूह वेदांता के चेयरमैन अनिल अग्रवाल को मुंबई शहर के विकास में उत्कृष्ट योगदान के लिये प्रतिष्ठित 'मुंबई रत्न' सम्मान से महाराष्ट्र के राज्यपाल भगतसिंह कोश्यारी ने राजभवन में सम्मानित किया।

इस अवसर पर अनिल अग्रवाल ने कहा कि मैं सिर्फ 19 साल का था, जब मुंबई के लिए ट्रेन से निकला और बहुत जल्द यह शहर मेरा बन गया। उन्होंने कहा कि महाराष्ट्र अवसरों और निवेश के लिये आकर्षक प्रदेश है जो कि कुछ वर्षों में राज्य विनिर्माण, वित्तीय बाजारों, प्रौद्योगिकी के लिए एक प्रमुख केंद्र के रूप में उभरा है जहां गुणवत्तापूर्ण मानव संसाधन है। इस पुरस्कार को पाकर मैं गौरवान्वित महसूस कर रहा हूं।

भारतीय म्यूचुअल फंड उद्योग में तेजी से बढ़ने की क्षमता : पारेख

उदयपुर (वि.)। एचडीएफसी एसेट मैनेजमेंट कंपनी के चेयरमैन दीपक एस पारेख ने कहा है कि भारतीय म्यूचुअल फंड उद्योग में तेजी से बढ़ने की क्षमता है। बीता हुआ वर्ष इतिहास में सबसे कठिन वर्षों में से एक माना जाएगा। एक ऐसी आपदा, जिसने पूरी दुनिया को प्रभावित किया। इसके चलते वैश्विक अर्थव्यवस्था में भयंकर गिरावट दर्ज की गई।

पारेख के अनुसार, इस साल के अंत तक भारत में जनसंख्या के एक बड़े हिस्से का टीकाकरण किया जा चुकेगा जिससे रिकवरी में मदद मिलने की संभावना है। पूरे वर्ष के आधार पर देखा जाए तो समग्र आर्थिक प्रभाव बहुत खराब होने की आशंका नहीं है बशर्ते कोरोना की स्थिति बहुत ज्यादा न बिगड़ जाए। वित्त वर्ष 2021 की चौथी तिमाही में स्वस्थ निवेश वृद्धि और उच्च बजटीय आवंटन के माध्यम से पूंजीगत व्यय को बढ़ावा देने पर केंद्र सरकार का जोर, बुनियादी ढांचे के वित्तपोषण तक पहुंच में सुधार आदि से भी अर्थव्यवस्था के पुनरुद्धार में मदद मिलनी चाहिए।

निप्पॉन इंडिया फ्लेक्सी कैप फ़ंड लॉन्च

उदयपुर (वि.)। निप्पॉन लाइफ़ इंडिया एसेट मैनेजमेंट लि. ने निप्पॉन इंडिया फ्लेक्सी कैप फ़ंड लॉन्च किया है। यह एक ओपन-एंडेड डायनेमिक इक्विटी स्कीम है, जो सभी मार्केट कैप में निवेश की संभावनाओं का लाभ उठाने के लिए निवेशकों को वन-स्टॉप सॉल्यूशन प्रदान करती है।

सौगत चटर्जी, को-चीफ बिजनेस ऑफिसर, निप्पॉन इंडिया म्यूचुअल फ़ंड, ने कहा कि फ़ंड ऑफर (एनएफओ) 9 अगस्त को बंद हो जाएगा। इस फ़ंड को निफ्टी 500 टीआरआई के साथ बेंचमार्क किया जाएगा। इसमें निवेश के लिए न्यूनतम राशि 500 रुपये निर्धारित की गई है और इसके बाद 1 रुपये के गुणकों में बोली लगाई जा सकती है। इस फ़ंड के साथ, हमने सभी मार्केट कैप में सबसे बेहतर संभावनाओं में निवेश के माध्यम से शानदार रिटर्न प्रदान करने का लक्ष्य रखा है। यह फ़ंड उच्च विकास की संभावना वाले क्षेत्रों में अवसरों की पहचान के लिए बॉटम-अप स्टॉक चयन की प्रक्रिया का उपयोग करेगा।

लालस कर रहे हैं ओलंपिक हॉकी मैचों की टोक्यो में कमेंट्री

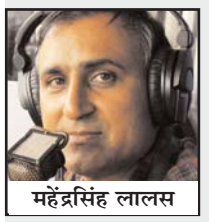
महेंद्रसिंह लालस

उदयपुर (ह. सं.)। अंतर्राष्ट्रीय कमेंटेटर व आकाशवाणी उदयपुर के कार्यक्रम प्रमुख महेन्द्रसिंह लालस टोक्यो में आयोजित हो रहे ओलिंपिक खेलों में हॉकी मैचों की कमेंट्री कर रहे हैं। आकाशवाणी के प्रतिभावान अधिकारी लालस अंतर्राष्ट्रीय कमेंटेटर हैं।

राजेन्द्र नाहर

इससे पूर्व वे विश्वकप हॉकी, बीजिंग ओलिंपिक खेल, गुवाहाटी और रांची राष्ट्रीय खेल, दिल्ली और ग्लासगो राष्ट्रमण्डल खेल, ग्वांग्झू और जकार्ता एशियाई खेल में आंखों देखा हाल सुना चुके हैं। लालस पूर्व में भी यहां आकाशवाणी केन्द्र में अपनी सेवाएं दे चुके हैं।

केन्द्र निदेशक राजेन्द्र नाहर और लालस के आने के बाद साहित्यिक-सांस्कृतिक हलचलें जो अब तक आकाशवाणी बनी हुई थीं, फिर से प्राणवंत बन निखरी हैं। इसके लिए भी बधाई देने का मन कर रहा है।

दिनेशकुमार सालवी को पीएच.डी.

उदयपुर (वि.)। पेसिफिक विश्वविद्यालय ने दिनेशकुमार सालवी को पीएच.डी की उपाधि प्रदान की है। सालवी ने 'महाकवि कालिदास के खण्डकाव्य में वर्णित भौगोलिक संरचना वर्तमान परिप्रेक्ष्य' विषय पर डॉ. विमलकुमार जैन के निर्देशन में शोधकार्य किया है। दिनेश वर्तमान में राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, चावण्ड में अध्यापक के पद पर सेवाएं दे रहे हैं।

सालवी ने प्रस्तुत शोधप्रबन्ध को पांच अध्यायों में निबद्ध किया है। प्रथम में भारत के भौगोलिक स्वरूप, द्वितीय में खण्डकाव्य का परिचय, तृतीय में मेघदूत एवं ऋतुसंहार में वर्णित भौगोलिक स्वरूप, चतुर्थ में मेघदूत एवं ऋतुसंहार में वर्णित भौगोलिक स्वरूप का भारत के वर्तमान स्वरूप से तुलनात्मक अध्ययन तथा पंचम अध्याय में उपसंहार मूल्यांकित जिसमें पूर्व अध्यायों का समीक्षण सार सम्मिलित किया गया है।

इस दृष्टि से यह शोधग्रन्थ संस्कृत साहित्य में विशेष रूप से कालिदास के खण्डकाव्य 'मेघदूत एवं ऋतुसंहार' में वर्णित भौगोलिक संरचना के साथ धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास को जानने के लिए उपयोगी सिद्ध होगा। सारांशत: यह कहा जा सकता है कि संस्कृत साहित्य में खण्डकाव्य और कालिदास के खण्डकाव्यों में वर्णित भौगोलिक संरचना से सम्बन्धित विषयवस्तु के जिज्ञासु अध्येताओं एवं शोधार्थियों को यह शोधग्रन्थ नवीन तथ्यों से अवगत करा सकता है और शोधार्थियों में नवीन दृष्टिकोण विकसित करने में यह सहायक सिद्ध होगा।

उल्लेखनीय है कि सालवी ने संस्कृत, आचार्य (साहित्याचार्य), हिन्दी, भूगोल, इतिहास, अर्थशास्त्र आदि में एम.ए. कर रखी है।

नवजात की सफल जटिल सर्जरी

उदयपुर (वि.)। पेसिफिक इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साईन्सेस (पिम्स) हॉस्पिटल, उमरड़ा में चिकित्सकों ने नवजात की श्वांस की झिल्ली (पर्दे) के छेद की सफलतापूर्वक सर्जरी की है।

पिम्स के चैयरमेन आशीष अग्रवाल ने बताया कि यह एक गंभीर बीमारी है और 10,000 नवजात में किसी एक को होती है। नवजात के जन्म से पहले ही बीमारी का पता चल चुका था। इस कारण मध्यप्रदेश निवासी इसके माता-पिता ने पिम्स हॉस्पिटल में डिलीवरी कराने का निर्णय लिया। इस बीमारी में डायफ्राम में छेद के कारण लगभग सारी आंतें छाती में आ जाती हैं जिससे बच्चा ठीक से श्वांस नही ले पाता है। कई बार वेंटीलेटर की भी जरूरत पड़ती है।

पीड्रियाट्रिक सर्जन डॉ. अतुल मिश्रा ने बताया कि लगभग ढाई घंटे चले इस ऑपरेशन में छेद को बंद कर आंतों को यथास्थान रखा गया। ऑपरेशन में डॉ. मिश्रा के साथ निश्चेतना विभाग के डॉ. नरेश त्यागी, डॉ. पूजा, स्टाफ अरूण, उदय, पीड्रियाट्रिक मेडिसीन विभाग के डॉ. विवेक पाराशर, डॉ. राहुल खत्री, डॉ. उज्ज्वल तथा एनआईसीयू के स्टाफअश्मति व टीम ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। प्रसूता की डिलीवरी पिम्स हॉस्पिटल में ही डॉ. चारूलता द्वारा करवाई गई।

डॉ. मिश्रा ने बताया कि नवजात की चिकित्सा व ऑपरेशन जननी सुरक्षा योजना के अनतर्गत नि:शुल्क किया गया। नवजात अब पूर्णत: स्वस्थ है व भविष्य में भी स्वस्थ रहने की पूरी संभावना है। पीड्रियाट्रिक विभागाध्यक्ष डॉ. विवेक पाराशर ने बताया कि पिम्स हॉस्पिटल सभी अत्याधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित है व बच्चों की विभिन्न जटिल बीमारियों के उपचार यहां होते हैं।

सबसे छोटी व बड़ी पगड़ी बांधने का रिकार्ड

उदयपुर (वि.)। बीकानेर के कृष्णचन्द पुरोहित ने सबसे छोटी व सबसे बड़ी पगड़ी बांधने का विश्व कीर्तिमान हांसिल किया है। उन्होंने पेंसिल, माचिस की तिली तथा बालपेन की रिफिल के सिरे पर सबसे छोटी और 374 मीटर की सबसे बड़ी पगड़ी बांधने का रिकार्ड कायम किया है।

जीजी इंजीनियरिंग की ग्रोथ को बढ़ाने में प्रोत्साहन देगी नई ईवी पॉलिसी

उदयपुर (वि.)। जीजी इंजीनियरिंग ने महाराष्ट्र सरकार द्वारा प्रस्तुत नई प्रोग्रेसिव इलेक्ट्रिक व्हीकल पॉलिसी की सराहना की है। यह पॉलिसी मैन्युफैक्चरिंग कम्पनीज़ के हित में है क्योंकि इसकी योजना उद्योगों व कंज्यूमर्स दोनों के लिए इंसेंटिव्स की पेशकश करते हुए, राज्य की ईवी मैन्युफैक्चरिंग कंपनियों और उनसे जुड़े व्यवसायों को आकर्षित करने की है। इस अभियान के अंतर्गत, शासन ने राज्य में 2025 तक एक सम्पूर्ण ईवी इकोसिस्टम के विकास और प्रमोशन के लिए 930 करोड़ रुपये आवंटित किए हैं। हाल ही में जीजी इंजीनियरिंग ने अपनी नई प्रोडक्ट लाइन, ईवी चार्जिंग स्टेशन के लांच की घोषणा की है। अपनी प्रोडक्ट लाइन को बढ़ाने के उद्देश्य से कंपनी ने एक ईवी चार्जिंग स्टेशन का निर्माण किया है जिसकी क्षमता 3 किलोवाट से 22 किलोवाट की है। कंपनी ईवी चार्जिंग स्टेशन के निर्माण को भी प्रारम्भ करेगी। ये स्टेशन्स दो पहिया, तीन पहिया और चार पहिया वाहनों को चार्ज करने के लिए उपयोग में लिए जाएंगे। यह निर्माण और वितरण नेटवर्क 3 महीनों में शुरू हो जाएगा।

सुषमा को पीएच.डी.

उदयपुर (वि.)। मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय ने सुषमा सिंह को पीएच.डी. की उपाधि प्रदान की है। सुषमा ने 'सोशल नेटवर्किंग की लत वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन' विषय पर एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. निरूपमा शर्मा के निर्देशन में शोधकार्य किया है।

सुषमा ने उदयपुर की 8 तहसील के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के 1200 से अधिक विद्यार्थियों पर यह अध्ययन किया। इनमें से 200 सोशल नेटवर्किंग के एडिक्टेड पाये गये। सोशल नेटवर्किंग की लत ग्रामीण और शहरी क्षेत्र में समान रूप से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और सामाजिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर रही है। शोध में सोशल नेटवर्किंग की लत को दूर करने हेतु सुझाव भी प्रस्तुत किये गये जो विद्यार्थियों, अभिभावकों एवं शिक्षकों के लिये महत्वपूर्ण है।

जिंक फुटबॉल टीम की उपलब्धि से सभी गौरवान्वित

उदयपुर (वि.)। हिंदुस्तान जिंक-वेदांता की पहल जिंक फुटबॉल अकादमी ने जयपुर में आयोजित राजस्थान स्टेट मेन्स लीग 2021 जीतकर इतिहास रच दिया। लीग मैचों में 18 वर्ष से कम आयु के जिंक फुटबॉल की टीम में खिलाड़ियों ने 7 मैचों में प्रभावशाली 5 जीत हासिल की और 23 गोल दागे जिसमें फाइनल में 10-2 की जीत शामिल है।

नवोदित फुटबॉलरों को बधाई देने के लिए शनिवार को वेदांता समूह के मुख्य कार्यकारी अधिकारी सुनील दुग्गल और हिंदुस्तान जिंक के सीईओ अरुण मिश्रा ने जावर स्थित जिंक फुटबॉल अकादमी में व्यक्तिगत रूप से खिलाड़ियों से मुलाकात की। युवा फुटबॉल खिलाड़ियों ने राजस्थान स्टेट लीग में अपने सपनों की अविश्वसनीय कहानी को साझा किया, जहां उन्होंने लगातार दूसरी बार फेयर प्ले अवार्ड भी जीता।

वेदांता समूह के मुख्य कार्यकारी अधिकारी सुनील दुग्गल ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि मुझे इन युवा फुटबॉलरों पर बहुत गर्व है क्योंकि उन्होंने अभूतपूर्व कोविड-19 अंतराल के बाद भी अपनी श्रेष्ठ खेल भावना का प्रदर्शन किया है। मैं उन्हें इस ऐतिहासिक जीत पर बधाई देते हुए आगामी टूर्नामेंटों के लिए शुभकामनाएं देता हूं।

स्वयं फुटबॉल के प्रति उत्साही जिंक के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अरुण मिश्रा ने भी टीम की शानदार जीत पर बधाई देते हुए कहा कि युवा टीम सभी की प्रशंसा की पात्र है जिन्होंने मैदान पर अपनी कड़ी मेहनत को एक ऐतिहासिक उपलब्धि में बदल दिया। टीम ने राजस्थान के चैपियन होने का गौरव हासिल किया है। मुझे पूरी टीम पर गर्व है जिसमें कोच और ट्रेनिंग स्टाफ शामिल हैं जिन्होंने इसे हकीकत में बदला है।

मेवाड़ी की कहानियों पर पीएच.डी.

उदयपुर (वि.)। शहनाज खान पठान ने प्रो. मलय पानेरी के निर्देशन में पीएच.डी की उपाधि प्राप्त की। जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय से 'कमर मेवाड़ी की कहानियों में मानव-जीवन के विविध पक्ष' विषय पर यह शोधप्रबन्ध तैयार किया गया।

श्री मेवाड़ी ने अपनी कहानियों में आदर्श और सामाजिक मूल्यों की संस्थापना का दृष्टिकोण रखा। उनकी कहानियां राजस्थान की हिन्दी-कहानी विधा को समृद्ध करती है। उन्होंने 'सम्बोधन' पत्रिका के माध्यम से प्रदेश के कथा-साहित्य को निरन्तर गति प्रदान की है। कहानियों में निम्नवर्गीय पात्रों की सामाजिक त्रासदी को अभिव्यक्ति मिली है। विचारधारा से जनवादी होने के कारण मेवाड़ी का चिन्तन प्रगतिशील रहा।

शब्द रंजन--- ज्ञान रंजन और बहु रंजन भी

शब्द रंजन केवल शब्दों का रंजन ही नहीं, सरस्वती का अनुरंजन भी है। इसमें आपकी बड़भागी आहुति इस रूप में भी हो सकती है-

अपने प्रतिष्ठान तथा प्रियजनों की स्मृति निमित्त विज्ञापन सहयोग करें।

मुख पृष्ठ	10,000/- रूपये
अंतिम पृष्ठ	7000/- रूपये
साधारण पृष्ठ	5000/- रूपये
आधा पृष्ठ	3000/- रूपये
चौथाई पृष्ठ	2000/- रूपये

सदस्यता शुल्क :

संरक्षक	11000/- रूपये
विशिष्ट सदस्य	5000/- रूपये
आजीवन सदस्य	3000/- रूपये
शब्द रंजन के सहयात्री	1500/- रूपये
साहित्यिक चौपाल	1000/- रूपये
वार्षिक संस्थागत	500/- रूपये
वार्षिक व्यक्तिगत	300/- रूपये

Shabd Ranjan, UCO BANK,
Bhupalpura Branch, Udaipur,
a/c no. 18450210000908,
IFSC no. UCBA0001845, a/c type- Current a/c

सुविधा और सुरक्षित प्राप्ति के लिए कृपया रचनाएं, समाचार एवं विज्ञापन आदि ई-मेल से भेजें।

shabdranjanudr@gmail.com

शब्द रंजन के संरक्षक के रूप में उदयपुर के एडवोकेट श्री फतहलालजी नागोरी से 11,000/- तथा शब्द रंजन के सहयात्री के रूप में रतलाम के शिक्षाविद् श्री पारसमलजी नलवाया से 2000/- रूपये साभार प्राप्त हुए।

मेरी प्रदर्शनधर्मी यात्रा (10)

-देवीलाल सामर

एक अन्तर्राष्ट्रीय समारोह में मेरे लिए यह जरूरी था कि मैं कठपुतलियों के तात्विक पक्ष का ही ज्ञाता न रहूं, उसके व्यावहारिक पक्ष से भी काफी परिचित हो जाऊं। मैं महीने भर तक रात-रात भर कठपुतलियों का संचालन करता रहा। मैंने महीने-डेढ़ महीने के प्रयास ही से पुतलियों का घोड़ा, घुड़सवार, सांप, सपेरा, बहुरूपिया, गेंदवाली तथा नर्तकी चलाना सीख लिया। हवाई जहाज में बैठने का मेरा प्रथम अवसर था। मैं भारत में भी विदेशी कपड़ों का उपयोग नहीं करता। दिल्ली में मेरी विदाई सर्वाधिक दुःखदाई थी। मैं ऐसी होटल में रखा गया जिसकी भव्यता का वर्णन मेरे लिए संभव नहीं है। बुखारेस्ट नगर की भव्यता एवं उसके साफ सुथरे लोग, साफ सुथरी सड़कें, गलियां एवं उनकी आकर्षक सजावट सब कुछ थे परन्तु मुझे मेरे उदयपुर नगर की सिकुड़ी हुई गन्दी सड़कें ही याद आती रहीं। फटे-पुराने वस्त्रों में लिपटे हुए मेरे देशवासी मेरी स्मृतियों में सदा ही घूमते रहे। मैं कुछ दिन अनमनासा बना रहा। मैं भारतीय पोशाक में रहता था। सिर पर टोपी या साफा रखे रहता था। पांवों में जोधपुरी कलाबूती जूतियां पहने रहता था। मैं दिखने में भी अच्छा था इस पर सबका आकर्षण का केन्द्र बन गया।

श्रीमती चट्टोपाध्याय चाहती थी कि मैं नाट्य संघ की दृष्टि से तो कठपुतलियों के नाट्य तत्वों का अध्ययन कर और हेण्डीक्राफ्ट बोर्ड के लिए कठपुतलियों की विविध शैलियों एवं उनके क्राफ्ट तत्वों से अवगत होऊं। इसी लक्ष्य से उन्होंने कबीर

साहब के समक्ष मुझे रूमानिया में होने वाले द्वितीय अन्तर्राष्ट्रीय कठपुतली समारोह में भारत का प्रतिनिधित्व करने का प्रस्ताव रखा। मैं चाहता था कि मैं एक भारतीय कठपुतली दल को लेकर इस समारोह में जाऊं परन्तु कबीर साहब ने इस प्रस्ताव को यह कहकर ठुकरा दिया कि भारतीय पुतलियां उस विश्व समारोह में कहीं भी नहीं टिक सकेंगी और देश को नीचा देखना पड़ेगा।

यह रिपोर्ट सामरजी ने डॉ. महेन्द्र भानावत से तैयार कराई थी। डॉ. भानावत ने बताया कि कमलादेवी को कलामण्डल की समस्त शोधात्मक जानकारी देते समय सामरजी ने सदैव उन्हें अपने साथ रखा। लोकनाट्यों के सर्वेक्षण की रूपरेखा तैयार की। रिपोर्ट लिखवाने के लिए सामरजी ने डेढ़ माह का समय दिया किन्तु डॉ. भानावत ने घर बैठे ही यह कार्य एक माह में पूरा कर दिया। 1

इसमें प्रकाशित ख्याल पुस्तकों का भी विशेषतः उपयोग किया गया तब संस्था के लिए ख्याल-प्रकाशकों तथा मेलोंठेलों से डॉ. भानावत ने बहुतसारी पुस्तिकाओं का संग्रह किया जो संस्था के संग्रहालय में सुरक्षित हैं और वह टाइप्ड रिपोर्ट भी। -सं.

अतः मुझे अकेले ही भेजने का निश्चय हुआ और मैं रूमानिया में होने वाले द्वितीय अन्तर्राष्ट्रीय समारोह में भारतीय की हैसियत से सम्मिलित होने के लिए यूरोप रवाना हो गया। जीवन में प्रथम बार विदेश जाने का मेरा यह अवसर था। मेरा पुत्र श्रीयुत गोविन्द उस समय जिन्दा था। मेरे कठपुतली कार्य में वही अगुवा था और उसी की रूचि देख कर मैंने भी अपनी रूचि को इधर ढाला, वरना मेरे लिए लोकनृत्य, लोकगीत, नाट्य, लोकसाहित्य आदि विषय ही पर्याप्त थे। मैं चाहता था कि मैं कठपुतली विषय गहराइयों तक उसी के माध्यम से पहुंचूं। अतः गोविन्द मेरी इस यात्रा को अपनी ही यात्रा समझ मेरे लिए सभी साधन जुटाने में जी-जान से जुट गया।

चूंकि मैं एक अन्तर्राष्ट्रीय समारोह में जा रहा हूं इसलिए मेरे लिए यह भी बहुत जरूरी था कि मैं कठपुतलियों के तात्विक पक्ष का ही ज्ञाता न रहूं, उसके व्यावहारिक पक्ष से भी काफी परिचित हो जाऊं।

उस वक्त तक कलामण्डल में पारम्परिक कठपुतली दल के माध्यम से रामजीवन पर आधारित एक कठपुतली नाटिका भी बनाई थी। गोविन्द ने इस बात की भरपूर कोशिश की कि मैं विदेश जाऊं तो अपने साथ खूब सारी भारतीय पुतलियां भी ले जाऊं और यदि हो सके तो पुतली संचालन कला में माहिर बन जाऊं।

मुझे याद है कि विलायत जाने से पूर्व मैं महीने भर तक रात-रात भर कठपुतलियों का संचालन ही करता रहा। इस कार्य में प्रसिद्ध पुतलीकार नाथू भाट मेरे सर्वाधिक सहायक रहे। 2 मुझमें आत्मविश्वास जगा और मैंने महीने-डेढ़ महीने के प्रयास ही से पारम्परिक पुतलियों का घोड़ा, घुड़सवार, सांप, सपेरा, बहुरूपिया, गेंदवाली तथा नर्तकी चलाना भलीप्रकार सीख लिया और यह विचार मन में दृढ़ कर लिया कि यदि अवसर मिला तो समारोह में कम-से-कम आधे घण्टे का कार्यक्रम में अवश्य ही दे सकूंगा।

डॉ. भानावत के अनुसार कलामण्डल द्वारा राजस्थान के विकास विभाग के सहयोग से बेदला में वहां के रावजी के महलों में एक-एक पक्ष के जुलाई-अगस्त 1958 में चार शिविर राजस्थान के लोककलाकारों के लगाये गये। अन्तिम शिविर में नागोर जिले के जीजोट गांव के नाथू भाट का दल आया। उसमें नाथू के अलावा उसका लड़का हनुमान, बहू टोलकी थे।

शिविर समाप्ति के बाद इस दल को कलामण्डल में रख उसके सम्पूर्ण पुतली संचालन का अध्ययन किया गया। इसी से पहलीबार डॉ. भानावत ने भी पन्द्रह दिन साथ रह मुख्यतः पहलीबार उनके द्वारा मंचित अमरसिंह राठौड़ का अक्षरशः खेल लिपिबद्ध किया। बेदला शिविरों के ही मुख्य संयोजक डॉ. भानावत थे जो पूरे दो माह वहीं रहे। सामरजी ने कठपुतलीकला पर जितनी भी पुस्तकें लिखीं वे डॉ. भानावत द्वारा ही प्रकाशित कराई गईं। - सं.

चूंकि संस्कृति मंत्री श्रीयुत हुमायु कबीर ने यह कह दिया था कि हम विश्व-पुतलियों की इस होड़ में कहीं टिक नहीं सकेंगे, इसलिए मैंने सम्मेलन की प्रतियोगिता में सम्मिलित होने का विचार छोड़ दिया परन्तु मैं यह तैयारी अवश्य करके गया कि मैं भारतीय पुतलियों के सम्बन्ध में इतनी जानकारी अवश्य प्राप्त कर लूं कि इस विश्व समारोह में भारत की कठपुतलियों के बारे में विश्वासपूर्वक प्रवचन दे सकूं।

उससे पूर्व भारतीय नाट्यसंघ के 'नाट्य' नामक त्रैमासिक पत्र के पुतली विशेषांक में मेरा राजस्थानी पुतलियों पर एक विस्तृत, सारगर्भित एवं सूचनाओं से भरपूर लेख प्रकाशित हो चुका था। यह अंक भारत से कहीं अधिक विदेशों में प्रचारित हुआ और विश्व के कठपुतली क्षेत्र में उसने तहलका मचा दिया।

राजस्थानी कठपुतलियों पर जो मेरा लेख था वह विश्व के प्रायः सभी कठपुतली विशेषज्ञों को प्रभावित करने में सर्वाधिक आकर्षण का पात्र बन गया। उसी लेख ने मुझे भी कठपुतली-संसार में एक विशिष्ट व्यक्ति के रूप में आसीन कर दिया जबकि मुझे उस समय तक कठपुतलियों के तात्विक ज्ञान के अलावा व्यावहारिक ज्ञान विशेष कुछ नहीं था। मेरा यह लेख इसलिए भी अधिक आकर्षक बन गया क्योंकि प्रथमबार पुतलियों के माध्यम से विश्व-पुतलियों के नाट्य-तत्वों की ओर स्पष्ट संकेत था। उस लेख में यह भी संकेत था कि भारतीय पुतलियां विश्व की पुतलियों की जननी है और पुतली तत्वों की दृष्टि से राजस्थानी पुतली विश्व की सर्वाधिक वैज्ञानिक पुतली है।

मैं हवाई जहाज द्वारा रूमानिया की राजधानी बुखारेस्ट पहुंचा। हवाई जहाज में बैठने का भी मेरा वह प्रथम अवसर था। अपने पारिवारिक एवं मित्रजनों से अलग होने का खासा दुख भी मुझसे नहीं सहा जाता, यह प्रकृति मुझमें आज भी बनी हुई है। गोविन्द मुझको दिल्ली तक पहुंचाने आया था। मेरी यात्रा सुखपूर्वक सम्पन्न हो और मुझे किसी तरह का कष्ट न हो उसकी उसे सदा ही परवाह रहती थी।

रूमानिया जाने के लिए मेरे कौन से कपड़े होने चाहिएं और वहां मित्रों को देने के लिए कौनसी भेंट, सामग्री साथ में रहनी चाहिए, उसका उसे पूरा ख्याल था। मैं भारत में भी विदेशी कपड़ों का उपयोग नहीं करता हूं तो विदेश में उन्हें करना मेरे सब मित्रों ने उचित समझा मगर मैंने एक की नहीं मानी और गोविन्द इस कार्य में भी मेरा सर्वाधिक प्रिय मददगार रहा। दिल्ली में उससे मेरी विदाई सर्वाधिक दुःखदाई थी। मैं उससे इतने लम्बे समय तक कभी-भी अलग नहीं हुआ था। दिल्ली छोड़ने के बाद भी मैं कई दिन तक उसके बिना बेचैनी को अनुभव करता रहा।

बुखारेस्ट एयरपोर्ट पर जो महानुभाव मुझे लेने आये थे उनमें से किसी से मेरा परिचय नहीं था। उनमें अधिकांश महिलाएं थीं। उनके हाथों में बड़े-बड़े फूलों के गुलदस्ते थे। मेरा भावभीना स्वागत हुआ और मैं ऐसी होटल में रखा गया जिसकी भव्यता का वर्णन मेरे लिए करना संभव नहीं है। यूरोपीय शहरों में पहलीबार मैंने बुखारेस्ट ही के दर्शन किये और ऐसी बड़ी होटल में पहलीबार ठहरा इसलिए भव्यता की यह छाप अंकित होना स्वाभाविक है।

जब मैं यूरोप के अन्य देशों में गया और बुखारेस्ट से भी बड़े-बड़े शहर और होटल देखे तो यह छाप तो मेरे हृदय पर स्थायी रूप से अंकित हो ही गई। एक-दो दिन तो मेरे किसी तरह गुजर गये परन्तु मेरा यह अकेलापन मुझे सदा ही खाये रहा। यद्यपि मुझे सभी लोगों का प्रेम मिला और मेरे प्रति सर्वाधिक आत्मीयता दर्शाई गई परन्तु देश तो देश ही होता है।

बुखारेस्ट नगर की भव्यता एवं उसके साफ सुथरे लोग, साफ सुथरी सड़कें, गलियां एवं उनकी आकर्षक सजावट सब कुछ थे परन्तु मुझे मेरे उदयपुर नगर की सिकुड़ी हुई गन्दी सड़कें ही याद आती रहीं। फटे-पुराने वस्त्रों में लिपटे हुए मेरे देशवासी मेरी स्मृतियों में सदा ही घूमते रहे। मैं कुछ दिन अनमनासा बना रहा। तब तक मेरे कोई खास दोस्त भी नहीं बने थे।

- क्रमशः

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।